ज्ञानामृत

फरवरी, 1986 वर्ष 21 ❋ अंक 8 मूल्य 2.00

स्वर्ण जयन्ति समारोह विशेषांक

नई दिल्ली में भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी जी को स्वर्ण जयन्ती समारोह का निमन्त्रण देने ब्र. कु. भाई बहनें उनके निवास स्थान पर गए। वे प्रधान मन्त्री के साथ ग्रुप फोटो में।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर कटक में भ्राता बी. आर. पटेल, मेम्बर बोर्ड आफ़ रैवीन्यु, उड़ीसा, आध्यात्मिक संग्रहालय में चित्रों पर ध्यान पूर्वक समझते हुए। उन्हें ब्र. कु. कमलेश ज्ञान के गुह्य रहस्यों से अवगत करा रही है।

कलकत्ता संग्रहालय में १८ जनवरी को शान्ति दिवस पर ब्र.कु. दादी निर्मल शान्ता जी बाबा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हैं आदरणीय डी. सी. गोराय, बिशप कलकत्ता।

हरिद्वार में नए राजयोग भवन का उद्घाटन करते हुए दादी चन्द्रमणि जी, साथ में स्वामी वेद व्यास नन्द जी, स्वामी प्रकाशानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी तथा अन्य भाई बहन दिखाई दे रहे हैं।

इन्दौर में प्रसिद्ध उद्योगपति एवं सांसद माननीय के. के. बिड़ला जी को ब्र. कु. विनय श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

कटक (कालेज स्क्वायर) में शान्ति दिवस समारोह में प्रवचन के पश्चात् मुख्य अतिथि भ्राता एस. एस, पाड़ी, डायरेक्टर जनरल पुलिस, उड़ीसा, सम्मानीय अतिथि बहन सरिता जयन्त दास, कमिश्नर चकबन्दी) रैवन्यु बोर्ड, कटक को ब्र. कु. मंजु ईश्वरीय उपहार दे रही हैं।

दिल्ली शक्ति नगर सेवाकेन्द्र में हुई संगोष्टी का एक दृश्य। विषय था विघ्न विनाशक स्थिति क्या है ?

हैदराबाद में 'विश्व शान्ति दिवस' समारोह में मंच पर (बाएं से) ब्र. कु. शोभा, भ्राता वीर भद्र राव, चेयरमैन आफ़ीशल लैंगवेजेस, कमीशन, भ्राता सी.रामुलू, न्यायधीश आ.प्र.हाई कोर्ट, बी. एस. रामकिशन, उपकुलपति, हैदराबाद विश्व विद्यालय, ब्र. कु. राजेन्द्र तथा ब्र. कु. कुलदीप।

भुवनेश्वर में भ्राता एल. एन. बेरिक, मैनेजिंग डायरेक्टर ओ. डी. सी. ओ. पंद्रह दिवसीय विश्व-शान्ति प्रदर्शनी का ऊद्घाटन करते हुए।

गुजरात के अग्रणी उद्योगपति भ्राता श्रैजिक भाई कस्तूर भाई के अहमदाबाद मणिनगर सेवा केन्द्र पर पधारने पर ब्र. कु. शारदा तथा कैलाश उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए।

हैदराबाद में विश्व शान्ति दिवस के अवसर पर न्यायधीश सी. श्री रामुलू जी, डॉ धारेश्वरी, पी. एच. डी. को रोलिंग शील्ड प्रदान करते हुए।

महबूबनगर में भ्राता महेन्द्रनाथ, वित्तमन्त्री आ. प्र. को ब्र. कु. नीरा श्री लक्ष्मी नरायण का चित्र भेंट करते हुए।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	स्वर्ण जयन्ती समारोह : विश्व शान्ति सम्मेलन तथा अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी सम्मेलन (सम्पादकीय)	२
२.	शान्ति गीत	४
३.	प्रजापिता ब्र० कु० ई० विश्व-विद्यालय (१९३६-८६)	५
४.	प्रजापिता ब्र० कु० ई० विश्व-विद्यालय एक अद्वितीय, अनुपम आध्यात्मिक शैक्षणिक संस्था	१४
५.	"आ चल ! ले चलूं" (कविता)	२०
६.	सतयुग ही स्वर्णयुग और उसी के लिए यह स्वर्ण जयन्ती	२१
७.	सचित्र समाचार	२३
८.	स्वर्ण जयन्ती का महत्त्व	२७
९.	प्रकृति आपकी दासी	२८
१०.	पावनता की गंगा बहायें	२९
११.	सम्पूर्ण पवित्रता, सुख एवं शान्ति का स्वर्णिम युग—एक वास्तविकता या स्वप्न ?	३१
१२.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३६

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

प्रजापिता ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सम्मेलन के ७ फरवरी के देहली अधिवेशन में अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश श्री नगेन्द्रसिंह मुख्य अतिथि होंगे। सम्मेलन के आबू अधिवेशन में ९ तारीख को राजस्थान के राज्यपाल श्री वसन्त दादा पाटिल मुख्य अतिथि होंगे।

संस्था की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि अन्य विशिष्ट व्यक्ति जिन्होंने सम्मेलन में भाग लेने की स्वीकृति दी है में 'कोस्टारीका देश के भूतपूर्व प्रधान जो वर्तमान समय राष्ट्र संघ की 'पीस युनिवर्सिटी' के प्रधान हैं, डॉ० राडीगो कराजो तथा राष्ट्र संघ के अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं सामाजिक मामलों के उपमहासचिव श्री योलह शामिल हैं। इसके अतिरिक्त भारत के यातायात मन्त्रालय के राज्यमन्त्री श्री राजेश पॉयलट, योजना मन्त्रालय के राज्यमन्त्री श्री अजित पंजा, सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री कृष्णा अय्यर, जनकल्याण मन्त्रालय के उपमन्त्री श्री गिरधर, लोकसभा के उपाध्यक्ष श्री थाम्बी दुरई, आडीटर और कम्पट्रोलर जनरल श्री टी० एन० चतुर्वेदी, इंग्लैण्ड की भूतपूर्व राज्य मन्त्री डेम यूडिथ हार्ट, जो वर्तमान समय संसद सदस्य हैं, जर्मनी में प्रसिद्ध वैज्ञानिक विलहेम स्टीन मिलर भी भाग ले रहे हैं। इनके अलावा अनेक विश्व विद्यालयों के उपकुलपतियों, समाचार पत्रों के सम्पादकों, राज्य के मन्त्रियों तथा अन्य क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों के सम्मिलित होने की भी स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि १० तारीख रात्रि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सम्मेलन के समाप्त होने पर ११ तारीख सायं में अन्तर्राष्ट्रीय रूहानी सिन्धी सम्मेलन आरम्भ होगा।

यह भी घोषित किया गया है कि ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय १९८६-८७ को स्वर्ण जयन्ती वर्ष के तौर से मना रहा है। और इसी अवसर पर संस्था को देश और विदेश के गणमान्य व्यक्तियों से बधाईयों के बहुत से पत्र आ रहे हैं। जिनमें न्यूजीलैन्ड के प्रधान मन्त्री श्री लांगे, मॉरीशियस के प्रधानमन्त्री श्री जगनाथ के भी पत्र शामिल हैं।

स्वर्ण जयन्ती समारोह : विश्व शान्ति सम्मेलन तथा अन्तर्राष्ट्रीय सिन्धी सम्मेलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय वर्ष १९८६-८७ को स्वर्ण जयन्ती के रूप में मना रहा है। प्रथम महत्वपूर्ण सार्वजनिक समारोह विश्व शान्ति सम्मेलन से इस वर्ष में होने वाले विविध कार्यक्रमों का श्रीगणेश होगा। इस शान्ति सम्मेलन का प्रथम अध्याय नई दिल्ली में ७ फरवरी से शुरू होगा तथा अन्य अध्याय माउंट आबू में खुलेंगे।

स्वर्ण जयन्ती के शुभारम्भ का इससे अधिक अच्छा अवसर और कौन-सा हो सकता है क्योंकि इसके शीघ्र पश्चात् जो विश्व शान्ति सम्मेलन होने वाला है उसमें भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से सम्बंधित विशिष्ट महानुभाव तथा इस संस्था की पवित्र बहिनें मानव मात्र से सम्बंधित 'शान्ति' विषय पर विचार-विमर्श करेंगी तथा वे सम्पूर्ण एकाग्रता से योगयुक्त होकर शान्ति और शक्ति की किरणें बिखेरेंगी।

सम्मेलन के शुभारम्भ के लिये दिल्ली से अधिक उपयुक्त स्थान और कौन-सा हो सकता है जो कि प्राचीन काल का इन्द्रप्रस्थ है तथा भारत जोकि आध्यात्मिकता के लिये प्रसिद्ध है और जिसे सोने की चिड़िया कहा गया है की राजधानी है। और विश्व शान्ति सम्मेलन के लिये स्थान माउंट आबू से अधिक उपयुक्त और कोई नहीं हो सकता क्योंकि यह स्थान प्राचीन कथाओं में ऋषियों की तपोभूमि के लिये प्रसिद्ध है और पिछले ३० वर्षों से यहाँ पर ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों ने योग तपस्या की है।

आमतौर पर स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर रंग-बिरंगे कार्यक्रम तथा उत्सव किए जाते हैं परन्तु विश्व-विद्यालय इसे अधिक दुनियावी तरीके से खुशियाँ मनाने के रूप में न लेकर परन्तु मानव मात्र के कल्याण के लिये परमात्मा द्वारा दिये जा रहे दिव्य ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाने के लिये इस अवसर पर कार्य करेगा।

विश्व-विद्यालय यह समझता है कि अभी तक वह केवल विश्व के अंश मात्र लोगों को ही ईश्वरीय ज्ञान का खजाना बांट पाया है। अतः इसे विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिये काफी पुरुषार्थ करना होगा। अतः यह अवसर स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन के लिये दृढ़ संकल्प करने का होगा। अतः इस अवसर पर विश्व-विद्यालय स्वयं को अधिक सेवार्थ पुनः समर्पण करेगा।

अवश्य ही यह अवसर बहुत खुशी का है क्योंकि पिछले ५० वर्षों में विश्व-विद्यालय ने चहुमुखी उन्नति की है और अब इनमें विश्व-व्यापी रूप ले लिया है। अब यह संस्था आध्यात्मिकता में अधिक प्रौढ़ और व्यवस्था में अधिक अनुभवी है।

हर आयु के, भाषा के, धर्म के और अनेक देशों के विविध गुणों सहित लोग अब इस संस्था का एक सशक्त और एकमूर्त्त ढांचा है और १६०००० स्त्री पुरुष, युवक और बच्चों की यह आध्यात्मिक सेना अब तैयार हो चुकी है जो कि अज्ञानता, देह अभिमान, भौतिक मूल्यों, नास्तिकता, दुराचार को समाप्त करने तथा स्वर्णिम युग को साकार करने के लिये अन्तिम सशक्त प्रयत्न पर उतारू है। संस्था के लिये एक खुशी का मौका है कि अपने विद्यार्थियों के अतिरिक्त बाहर के लोग, बहुत-सी अन्य संस्थाएं भी इसके उद्देश्यों को, इसकी कार्य विधि को, इसकी व्यवस्था को तथा इसके नियमों और शिक्षाओं की सराहना करते हैं। इस स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर हम सब ऐसे महानुभावों और संस्थाओं का धन्यवाद करते हैं जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को समय-समय पर सहयोग और सहायता देते आए हैं।

स्वर्णिम युग और स्वर्ण जयन्ती के लिये स्वर्णिम विचार

इस स्वर्ण जयन्ती तथा विश्व शान्ति सम्मेलन के शुभ अवसर पर ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बहनें जो कि विविध व्यवसायों में संलग्न हैं अपने प्रवचनों में बताएंगे कि किन स्वर्णिम विचारों से उनका जीवन आनन्दमय, उनका कार्य कर्म-योग और उनकी मानसिक अवस्था स्थिर, शान्त, और नकारात्मक विचारों तथा तनाव रहित बनी है। वे बताएंगे कि किस विशेष दिव्य महावाक्य ने उनके जीवन को बदल डाला और वे अपने आध्यात्मिक अनुभव भी सुनाएंगे, अतः 'स्वर्णिम युग के लिये स्वर्णिम विचार' जो कि विश्व शान्ति सम्मेलन का मूलभूत लक्ष्य होगा। यह ही लक्ष्य स्वर्ण जयन्ती समारोह का भी होगा।

अन्य व्यक्ति, जो अपने पत्र पेश करेंगे या विचार विमर्श में भाग लेंगे, भी अपने अनुभवों से बताएंगे कि वे कौन से स्वर्णिम विचार हैं जिनसे उनका व्यवसाय आनन्दमय, और समाज स्वर्णिम समाज बन सकता है। हर प्रतिनिधि अन्य लोगों के लिये ज्ञानवृद्धि करेगा और वह सोचेगा कि यह सृष्टि शान्ति का उपवन कैसे बने। छोटे बच्चे भी मंच से कुछ स्वर्णिम विचार पेश करेंगे। युवक विवाहित व्यक्ति तथा विविध प्रकार के व्यवसायाओं के लोग जैसे कि चिकित्सक, वैज्ञानिक, शिक्षाशास्त्री, पत्रकार, न्यायविद, व्यापारी वर्ग, राजनेता, धर्मनेता, महिलाएं तथा सर्व प्रकार के लोग इसमें अपने-अपने स्वर्णिम विचार उपहार के रूप में देंगे। आर्टिस्ट तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम करने वाले सर्व को आध्यात्मिक खुशी प्रदान करेंगे। यह सचमुच को स्वर्ण-जयन्ती होगी जो कि सर्व को स्वर्णिम विचारों से समृद्ध करेगी। यह सचमुच ही विश्व शान्ति सम्मेलन होगा जो कि विश्व शान्ति वर्ष का शुभारम्भ करेगा। हर एक अन्य दूसरे को 'ओम शान्ति' शब्दों से नमस्कार करेगा। ईश्वर आपको दिव्य शान्ति प्रदान करे, धरा पर शान्ति हो, आकाश में शान्ति हो, सागरों पर शान्ति हो, सर्वत्र शान्ति हो यह हमारी शुभकामना है।

सिंधी रूहानी सम्मेलन

विश्व शान्ति सम्मेलन के शीघ्र पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय सिंधी रूहानी सम्मेलन का शुभारम्भ होगा। सिंधी जो कि भारत उप-महाद्वीप के इस ओर रहते हैं वे ही शायद सांस्कृतिक, भाषाई तथा धार्मिक समुदाय है जो भारत के राजनीतिक बटवारे के बाद अपना निवास राज्य खो चुके हैं। सिंधी समुदाय जो कि साहसी और कार्यकुशल हैं सारे विश्व में फैले हुए हैं। और जिन देशों में वे रहते हैं वहाँ व्यापार और उद्योगों द्वारा उन देशों की आर्थिक व्यवस्था में अपना सहयोग दे रहे हैं। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय जिसकी स्थापना सिंध में ही हुई थी, इन सिंधियों को इस अवसर पर निमंत्रण दिया है। क्योंकि इसका एक कारण यह भी है कि विश्व विद्यालय को तब जब कि इसकी स्थापना हुई थी ठीक प्रकार से समझा नहीं गया, अतः अब इन सिंधी भाई बहिनों की सेवा करने का अच्छा मौका है, ऐसा सोचकर गोल्डन जुबली के अवसर पर इनको निमन्त्रण दिया गया है।

इस शताब्दी के ३० वें और ४० वें दशक में भारत में लोगों का ध्यान स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये संघर्ष की ओर और बटवारे से उत्पन्न मुसीबतों की ओर या द्वितीय विश्व-युद्ध तथा उसके परिणामों की ओर केन्द्रित था। उस समय लोग मौलिक सिद्धान्तों में सुधार जैसे कि महिलाओं के प्रति भावना तथा उनके सामाजिक स्तर तथा अन्य धार्मिक सिद्धान्तों को जो एक नई क्रान्ति लाने वाले थे उन्हें वे सहर्ष स्वीकार करने हेतु तैयार न थे। तो संस्था ने वह समय तथा शक्ति को स्वयं के आध्यात्मिक ढांचे को सशक्त बनाने में लगाया तथा जनता की सेवा करने हेतु स्वयं में चारित्रक बल भरने में स्वयं को व्यस्त किया। अब जो ईश्वर दाता द्वारा जो प्राप्तियाँ हुई उनको दूसरों को बाँटने का समय आ पहुँचा। संस्था द्वारा हर राज्य

में भिन्न-भिन्न समय पर बड़े-बड़े कार्यक्रम होते रहे हैं परन्तु जैसे कि ऊपर बताया गया है कि यह समुदाय सर्व राज्यों में बिखरा हुआ है। हम उनका अधिक संख्या में आने के लिये स्वागत करते हैं जैसा कि हम सबका खुले दिल से स्वागत करते हैं क्योंकि हम कोई भाषाभेद या धर्मभेद में आस्था नहीं रखते। जिसकी इच्छा हो, जिज्ञासा हो उसे किसी भी स्थूल भेदभाव के हार्दिक निमंत्रण है। स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर सबको लाख-लाख बधाई। —जगदीश

शान्ति गीत

ब्र० कु० मोहन, अमृतसर

शांति की एक चिड़िया आई
लेकर एक संदेश रे
क्यों फँसे प्राणी यहाँ
क्यों भूले अपना देश
मैं आई हूँ देखो तुमने
फिर से याद दिलाने
याद करो वो दिन पुराने
कितने ये सुहाने
शांति का था नीड़ अपना
पावन था अपना वेश।

दुख अशांति के पिंजड़े में
क्यों फँसा तू आके
काहे अपना धाम भुलाया
दुखदाई सुख पाके
दैवी गुण सब दूर हुए हैं
अवगुण हुये हैं प्रवेश
लाई हूँ मैं मंत्र प्यारा
शाँति का सुनाने
ज्ञान-योग के पंख लाई हूँ
तुमको साथ ले जाये
बुला रहा है पिता तुम्हारा
शिव अपने स्वदेश।

शाँति सागर की लहरें
जब-जब पास में आये
मन शाँत हो तन हो शीतल
पावन सुख बरसाये
शाँति अमृत के सागर में
ज्यों कोई गहरा जाये
आनंद के झूले झूलें
आत्म तृप्ति पाये
पा लिया अब जो पाना था
फिर वो आत्मा गाए

चलता-चलता इस सागर में
जब कोई खो जाये
हीरे मोती शिव सागर से
वो अनोखे पाये
शाँति से भर जाये नैना
शाँति सबको लुटाये
हर लहर में हर पहर में
समाया शिव का ध्यान रे
बेहद अनुभव में छुपा है
शाँति और विश्राम रे
सागर में डूबी हर गागर
शाँति धार बहाये

पत्रिका विषय विवरण

१. प्रकाशन स्थान —देहली
२. प्रकाशन अवधि —मासिक
३. मुख्य सम्पादक का नाम —जगदीश चन्द्र हसीजा
४. पता—१९/१७ शक्तिनगर, दिल्ली
५. प्रकाशक, मुद्रक का नाम—ब्र० कु० आत्मप्रकाश
६. पता—बी० ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली
७. सम्पादक का नाम पता—ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी० ९/१९ कृष्णानगर दिल्ली
८. राष्ट्रीयता—भारतीय
९. स्वामी का नाम—ब्र० कु० ई० विश्व विद्यालय

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय (१९३६--८६)

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय वर्ष १९८६-८७ को 'स्वर्णिम जयन्ती वर्ष' के रूप में मना रहा है। इस शुभ अवसर पर इस महान् संस्था की उपलब्धियाँ और साहसपूर्ण कार्यों का अवलोकन और लेखा-जोखा करना यथार्थ होगा। साथ ही इसके प्रगति के मार्ग में पिछले ५० वर्षों में जो बाधाएँ आई हैं तथा जिनका यह संस्था सफलतापूर्वक सामना करते हुए निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ती रही है उन पर भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। यह एक ऐसा अवसर है जबकि यह संस्था जन-जन की आध्यात्मिक जाग्रति के लिये तथा विश्व में स्थाई सुख-शान्ति की स्थापना के कार्य में तीव्रगति लाने के लिये अनेकानेक कार्यक्रम बनायेगी और भविष्य में भी इस संघर्ष-ध्वस्त विश्व में पवित्रता, शान्ति, प्रेम, न्याय, एकता आदि मूल्यों की पुनंस्थापना के लिये उत्साह-पूर्वक कार्य करती रहेगी।

इसकी प्रगति के ६ चरण

इन ५० वर्षों में इस संस्था ने जो महान् प्रगति की है उन्हें ६ प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है—

प्रथम चरण एक पारिवारिक (घरेलू) आध्यात्मिक सत्संग (१९३६—३७)

यह संस्था आरम्भ में एक छोटे से सत्संग के रूप में शुरू हुई जो कि दादा लेखराज के घर पर होता था। दादा हीरे-जवाहरात के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। वे अपनी ईमानदारी और श्रेष्ठ व्यवहार के कारण स्वतन्त्रता पूर्वक अनेक राज-घरानों में आते-जाते रहते थे। विशेष तौर से उनका नेपाल और उदयपुर के राजघरानों से घनिष्ठ सम्बन्ध था। दादा श्री नारायण के भी परम भक्त थे। बचपन से ही वे उदारचित्त और महादानी थे। जैसे वे बड़े होते गये उनकी रुचि श्रीमद्भगवत गीता और अन्य धार्मिक ग्रंथों में बढ़ती गई। वे अपने व्यवहारिक जीवन में धार्मिक शिक्षाओं को धारण करते हुए सात्विक भोजन का सेवन करते थे तथा आध्यात्मिक उन्नति पर विशेष ध्यान रखते थे। इन सभी नियमों का पालन करने से वे अन्तर्मुखी होते गये और स्वयं का आत्म-निरीक्षण करने लगे।

आखिरकार वह समय भी आ गया जब उन्हें सत्यता का बोध हुआ। उन्हें सन् १९३६ में, जबकि उनकी ५० वर्ष की आयु थी, अनेक दिव्य साक्षातकार हुए जिनमें उन्होंने देखा कि इस शताब्दी के अन्त तक स्वर्णिम युग की स्थापना होगी तथा इससे पहले इस तमोप्रधान कलियुगी सृष्टि का 'महाविनाश' होगा। इससे वर्तमान समाज का समस्त ढाँचा ध्वस्त हो जाएगा जो कि अब पूरी तरीके से खोखला भ्रष्टाचारी बन गया है और इसकी जड़ों में दीमक लग चुकी है और अब इसका खड़ा रहना असम्भव हो गया है। दादा ने परमात्मा की 'दिव्य ज्योति' भी देखी और अन्तर्मन से एक आवाज़ सुनी कि जिस दिव्य ज्योति का साक्षातकार हुआ है वह आनन्द के सागर 'ज्योति बिन्दु परमात्मा शिव हैं।' उन्हें अन्य भी अनेक साक्षातकार हुए। वास्तव में उनके जीवन में मोड़ लाने वाली यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना थी। इनसे दादा के जीवन में महान् आध्यात्मिक परिवर्तन आया और उनके सम्पर्क या संबंध में आने वाले व्यक्तियों पर भी बहुत प्रभाव पड़ा क्योंकि उन्हें दादा के चेहरे पर तेज, आंखों में चमक और मस्तक पर पवित्रता का दिव्य प्रभा-मण्डल स्पष्ट नज़र आता था।

इस अवसर पर दादा ने एक दिव्य वाणी (आकाशवाणी) भी सुनी कि स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना के लिये तथा नैतिक मूल्यों व पवित्रता, सुख-शान्ति सम्पन्न नई सृष्टि बनाने के लिये उन्हें परमात्मा का साकार रथ (माध्यम) बनना है। इसके प्रत्युत्तर में दादा ने अपने विशाल व समृद्धि-शाली जवाहरात के धन्धे (व्यापार) को समेटकर अपने को फारिग कर लिया और अपने निवास स्थान पर ही सत्संग करने लगे। जिसमें उनके अपने ही परिवार के सदस्य अधिकतर भाग लेते थे। इस प्रकार जैसा कि कहावत है "घर से ही दान आरम्भ करो" उसे दादा ने सिद्ध किया। शीघ्र ही दादा के अन्य रिश्तेदार, पड़ोसी व मित्र-सम्बन्धी भी इसमें भाग लेने लगे। वे प्रतिदिन दादा का प्रवचन सुनने के लिये वहाँ एकत्रित होने लगे जिन्हें वे अब एक पहुँचा हुआ व महानता (दिव्यता) को प्राप्त उच्च-आत्मा समझने लगे थे। जैसे-जैसे लोग सत्संग में आने लगे, वे अपने साथ अपने बच्चों को भी ले आते थे ताकि वे भी ऐसे सुन्दर वातावरण का लाभ उठा सकें और दादा के मधुर बोल व जीवन को परिवर्तित करने वाली वाणी से प्रभावित होकर अपने जीवन को भी ऐसा बना सकें। अब वे दादा को 'बाबा' या 'ओम बाबा' कहने लगे थे। इस महान पवित्र व आध्यात्मिक वातावरण में अनेकों को दिव्य साक्षातकार भी हुए और कई प्रकार के अनुभव हुए। लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम था कि अब दादा निराकार परमात्मा के माध्यम (रथ) बन चुके हैं।

अब चारों ओर आवाज़ फैल गई कि यह एक अनोखा सत्संग है जहाँ पर जाने से सहज ही जीवन में परिवर्तन होता है, और पवित्रता, शान्ति और सुख की अनुभूति होती है। इस प्रकार शीघ्र ही सत्संग में आने वालों की संख्या बढ़ने लगी। लेकिन फिर भी यह संख्या बहुत अधिक विशाल नहीं थी क्योंकि दादा 'साक्षातकार' अथवा 'दिव्य-दृष्टि' को अधिक महत्त्व नहीं देते थे। लेकिन वे अधिक बल आध्यात्मिक शिक्षा, नैतिक मल्यों को अपनाने, अनुशासन और ब्रह्मचर्य की पालना पर ही देते थे।

इस समय तक किसी प्रकार का संविधान या सदस्य बनाने की परिपाटी नहीं थी। इस 'आध्यात्मिक परिवार' का सदस्य बनने के लिये, केवल तीव्र जिज्ञासा तथा स्वयं को पवित्र बनाने और ईश्वर को पहचानने की इच्छा की आवश्यकता थी। थोड़े समय में यह छोटा-सा 'रूहानी परिवार' एक 'आध्यात्मिक शिक्षा' देने वाली संस्था के रूप में सामने आया और एक ईश्वरीय विश्व-विद्यालय अथवा 'रूहानी शिक्षा देने वाला विश्व-विद्यालय' बन चुका था। लेकिन इसका पुराना 'पारिवारिक रूप' भी कायम रहा तथा साथ ही एक शिक्षा देने वाली संस्था का भी रूप बन चुका था। क्योंकि यहाँ आने वाले सभी विद्यार्थी अपने मन को 'ओम' के वास्तविक स्वरूप में टिकाते थे, इस आध्यात्मिक (रूहानी) परिवार का नाम 'ओम मण्डली' पड़ गया।

प्रगति का द्वितीय चरण आध्यात्मिक व नैतिक सुधार का विद्यालय (१९३७—१९३९)

अपने प्रारम्भिक पारिवारिक रूप से अब इसने एक संस्था का रूप धारण किया तथा आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा नैतिक जागृति लाने वाला विद्यालय बन चुका था। बहुत से वृद्ध लोगों की माँग पर बच्चों के लिये हॉस्टल व स्कल भी खोला गया जहाँ पर कन्याओं को राजकीय पढ़ाई पढ़ाने के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा, श्रेष्ठ चाल-चलन तथा पवित्र वातावरण बनाने पर भी बल दिया जाता था ताकि उन्हें सन् २००० के बाद आने वाले स्वर्णिम युग के लिये तैयार किया जा सके। निराकार परमात्मा, जिन्होंने दादा के तन को अपना माध्यम बनाया था, ने उन्हें बताया कि निरन्तर उन्नति के लिये जीवन में मन-वचन-कर्म से पवित्रता आवश्यक है। इसके लिये उन्हें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य आदि विकारों का त्याग करना होगा क्योंकि इनके कारण

ही सभी प्रकार की समस्याएँ तथा दुःख, अशान्ति, लड़ाई-झगड़ा होता है फिर चाहे वे सामाजिक हो अथवा आर्थिक, राजनैतिक, मानसिक, शारीरिक व आध्यात्मिक हों।

बाबा के इन स्पष्ट महावाक्यों के कारण तथा ब्रह्मचर्य और पवित्रता को स्व-उन्नति के लिये अति महत्त्व देने के कारण, उन लोगों में खलबली मच गई और वे क्रोधित हो उठे, क्योंकि उन्हें ऐसे विकारी जीवन में रहने की आदत-सी हो गई थी। ऐसे व्यक्तियों ने बाबा पर सभी प्रकार का दबाव डालना शुरू किया कि वे पवित्रता (ब्रह्मचर्य) पर अधिक बल न दें। लेकिन उनकी सभी कोशिशें नाकाम सिद्ध हुईं। बल्कि उनके सभी प्रकार के अत्याचार व दबाव डालने के प्रयत्न विफल होते गये और लोगों में यह संस्था अधिक प्रसिद्ध होती गई।

इस समय में (१९३७ से १९३९) इस संस्था के सदस्यों को बहुत खिलाफत (विरोध) का सामना करना पड़ा। १९३७ में बाबा ने माताओं-बहनों का एक ट्रस्ट बनाया और अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति इन्हें समर्पित कर दी। विश्व के इतिहास में इससे पहले ऐसा समर्पण का कार्य कभी नहीं हुआ था और न ही किसी ने माताओं-बहनों का एक ऐसा न्यास (ट्रस्ट) बनाया था। विश्व में कहीं भी किसी ने माताओं-बहनों को ऐसा आदर-सत्कार नहीं दिया था। अन्य स्थानों पर महिलाओं का आन्दोलन इसके बहुत बाद ही शुरू हुआ। बल्कि अभी तक भी महिलाओं का इतना पवित्र सत्कार कहीं भी नहीं होता है जैसा कि दादा उन्हें भारत-माता कहकर पुकारा करते थे। इस न्यास की कमेटी में एक अल्प-आयु की कन्या भी थी जो अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और आध्यात्मिक व दिव्य गुणों के कारण सब में प्रमुख मानी जाती थी। उसे 'ओम राधे' के नाम से जाना जाता था। वह अन्य सदस्यों को साथ मिलाकर इस संस्था की प्रगति के लिये अथक परिश्रम करती रही।

प्रगति का तृतीय चरण

पवित्र यज्ञ के रूप में (१९३९ से १९५१ तक)

इस 'रूहानी परिवार' ने अब एक अनोखे यज्ञ का रूप ले लिया था। यहाँ हरेक व्यक्ति, अपनी सूक्ष्म आत्मा को ज्ञान-प्रकाश रूपी ज्योति से जलाकर उसमें अपनी सभी कमियाँ तथा बुराइयों को स्वाहाः करने लगा। योगाग्नि में वे अपनी अपवित्रता को भस्मीभूत करने लगे। अतः यह वास्तविक 'राजसूय अश्वमेघ अविनाशी ज्ञान यज्ञ' था क्योंकि यहाँ मन (जिसे अश्व घोड़ा भी कहा जाता है) को वश में करके ज्ञानाग्नि में स्वाहाः किया जाता था और इस कहावत को चरितार्थ किया था कि "मन जीते जगत जीत" यहाँ पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने अपना सभी कुछ लोक-कल्याण अर्थ समर्पित कर दिया।

अब यह एक ऋषिकुल अथवा तपोभूमि का रूप धारण कर चुका था जहाँ प्रत्येक व्यक्ति ईश्वरीय ज्ञान के साथ राजयोग का अभ्यास करता था। यहाँ पर उन्हें अपने और अन्यों के संस्कारों को भी परिवर्तित करना होता था तथा एक दो को साथ मिलाकर चलना होता था। इस प्रकार उन्होंने सहयोग और आपसी मेल-जोल व भ्रातृत्व की भावना से रहना सीख लिया था।

इतना सब करते हुए यह संस्था आम जनता से दान-चन्दा नहीं लेती थी। बाबा हमेशा दान लेने को भीख माँगना समझते थे। संस्था का सारा खर्चा दादा द्वारा समर्पित धन व अचल सम्पत्ति तथा समर्पित बहन-भाइयों द्वारा स्वेच्छा से दिये हुए धन से ही चलता था।

मातेश्वरी सरस्वती ने इस संस्था की प्रगति में विशेष (अद्भुत) तथा सराहनीय कार्य किया है। वे सद्गुणों की साकार मूर्त थीं और उनका एक अनुकरणीय आदर्श जीवन था। उनमें अनेक विशिष्ट गुण थे जिसके आधार पर उन्होंने इस संस्था को अनेक बाधाओं को पार करते हुए निरन्तर प्रगति की ओर आगे बढ़ाया। वे एक महान्

योगिन के साथ-साथ बहुत बड़ी प्रशासिका भी थीं।

मातेश्वरी सरस्वती के शरीर त्यागने के पश्चात् ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी, जो कि पहले से ही मातेश्वरी जी की मददगार थीं (सेवा-केन्द्रों की कन्ट्रोलर के रूप में) ने दादी प्रकाशमणी जी के साथ प्रशासिका का कार्यभार सम्भाल लिया था।

प्रगति का चतुर्थ चरण
(१९५१ से १९६९ वर्ष तक)

यह चरण इस संस्था के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण था। इस काल में संस्था का विधान लिखित रूप में बनाया गया। 'एक सप्ताह के कोर्स' के रूप में ईश्वरीय ज्ञान देने का विधान बनाया गया। हिन्दी में एक 'पत्रिका' का प्रकाशन करना आरम्भ हुआ और अनेक नई पुस्तकें प्रकाशित की गईं। बाबा ने ब्रह्माकुमारियों व ब्रह्माकुमारों को अपने-अपने कार्य क्षेत्र की मार्ग प्रदर्शना प्रदान की ताकि वर्तमान और भविष्य के कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो सकें। सन् १९६८ में दादी प्रकाशमणी और दीदी मनमोहिनी को मुख्य प्रशासिका, संयुक्त मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया। बाबा ने उन्हें अनेक ऐसी सांसारिक व भौतिक बातों की जानकारी दी जिन्हें सेवा-केन्द्रों पर आने वाले जिज्ञासु प्रायः पूछा करते थे अथवा 'साप्ताहिक कोर्स' कराते समय जिनकी आवश्यकता पड़ती थी। बाबा ने उन्हें अनेक धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, व शिक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण बातों व घटनाओं से भी अवगत कराया और उन्होंने समाज के अनेक विशिष्ट नेताओं के प्रति उन्हें सन्देश भी दिया। बाबा ने उन्हें अनेक समस्याओं का समाधान भी सुझाया तथा आध्यात्मिक ज्ञान को विस्तरित रूप से स्पष्ट किया। इन सभी शिक्षाओं ने ज्ञान को गहराई व स्पष्टता से समझने समझाने में मदद की ताकि जीवन के हर मोड़ व क्षेत्र में काम आ सके।

बाबा ने अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं पर भी प्रकाश डाला जैसे कि विश्व की दो महान शक्तियों में शस्त्रों की होड़; अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक महा-सम्मेलनों; शान्ति सम्मेलन, रुद्र-यज्ञ, वैज्ञानिक कान्फ्रेंस आदि; अनेक राजनैतिक नेताओं द्वारा चलाये गये आन्दोलनों; मनुष्य का चाँद तक पहुँचना; अनेक बड़े-बड़े राजनैतिक नेताओं के ऊपर लगाये गये भ्रष्टाचार के आरोप; जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिये किये जाने वाले उपाय; अनेक धार्मिक महोत्सव व त्यौहारों का मनाना (स्वतन्त्रता व गणतन्त्र दिवस) आदि-आदि। इस प्रकार बाबा ने उन्हें विशाल तौर पर व विश्व-स्तर पर सोचने व कार्य करने की शिक्षा दी।

इस काल (चरण) में बाबा ने सभी को निःस्वार्थ सेवा करने के लिये प्रेरित किया और सभी ने अनुभव किया कि उनका भी नये विश्व की स्थापना करने में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

उन्होंने महसूस किया कि बाबा ने उन्हें गंदगी से निकालकर अनुकरणीय विशिष्ट चाल-चलन वाला व्यक्ति अथवा होवनहार देवी-देवता बना दिया है। बाबा ने उनमें एक ऐसा उत्साह व उमंग भर दिया कि वे समझने लगे कि अपना महान् भाग्य बनाने का यही समय है।

इस कलियुगी संसार को बदलकर, सम्पूर्ण सुख-शान्ति व पवित्रता सम्पन्न नये स्वर्णिम संसार की स्थापना हेतु बाबा ने उन्हें अनेक सुझाव व श्रीमत दी जिन्हें ६ सिद्धान्तों (नियमों) में विभाजित किया जा सकता है—

छः सिद्धान्त (Principles)

(१) आत्म-स्थित होने का दृढ़ता और गम्भीरता से पुरुषार्थ करना और परमात्मा को बड़े स्नेह से याद करना क्योंकि वह हमारे आध्यात्मिक निराकार माता-पिता है तथा अन्य सभी आत्माएँ परमात्मा की सन्तान होने के नाते आपस में भाई-भाई हैं। इस विचारधारा और वृत्ति से आपके जीवन की धारा में सहज ही परिवर्तन आ जायेगा और विश्व में सम्पूर्ण क्रान्ति आयेगी। मन

को इस सर्वोच्च स्थिति में स्थित करनेका नाम ही योग है जिससे अनेकानेक लाभ और शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

(२) जीवन के हर पहलु में वैज्ञानिक और व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाना। हर कार्य दृढ़ता और विश्वास के साथ करना। परमात्मा के साथ बुद्धियोग जोड़कर तथा अन्य आत्माएँ तथा शरीर और प्रकृति के सम्बन्ध आदि का ध्यान रखते हुए तथा समय का महत्त्व समझते हुए उसे पूरी लगन और ईमानदारी से सफल करना।

(३) सहनशीलता, नम्रता, सन्तुष्टता, अन्तर्मुखता, मधुरता, अनुशासन आदि दिव्य गुणों को अपनाना तथा सदा निर्विकारी और समर्थ संकल्प चलाते रहना। यह भी स्मृति में रखना कि अच्छे कार्यों का पुरस्कार अवश्य मिलता है और पवित्रता तथा दिव्य गुणों की धारणा के बिना किसी प्रकार की भी शान्ति मिलना असम्भव है। वह चाहे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक या वैज्ञानिक क्षेत्र या अन्य क्षेत्र ही क्यों न हो।

(४) सभी के प्रति कल्याण की भावना रखना और सामाजिक न्यायों के आदर्शों का पालन करते हुए निःस्वार्थ सेवा करते रहना। इस कल्याण की और स्नेह की भावना लाने से यह संसार रहने लायक एक श्रेष्ठ संसार बन जायेगा।

(५) कुछ समय प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान को सुनने व मनन करने के लिये तथा अपनी आध्यात्मिक उन्नति और रिफ्रेशमेंट के लिये देना। क्योंकि आलस, सुस्ती, कार्यों को टालने की आदत व लापरवाही आदि अवगुण आत्मा के महान शत्रु हैं।

(६) अपनी दृष्टि-वृत्ति को बेहद की बनाना और संकुचित विचारधारा का त्याग करना। अपने को बुराइयों से छुटकारा दिलाकर मन में कभी भी किसी के प्रति घृणा-द्वेष व बदले की भावना नहीं रखना। सदा इसी विश्वास के साथ कार्य व्यवहार करना कि समस्त संसार मेरा एक बेहद का परिवार है।

इन सिद्धान्तों को मानने व अपनाने से ब्रह्माकुमारियों तथा ब्रह्माकुमारों के स्वभाव में महान परिवर्तन आ गया और उन्हें समाज में सुधार लाने के लिये प्रेरित किया।

इस प्रकार बाबा न केवल प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का संस्थापक पिता था बल्कि उन्होंने निकट भविष्य में आने वाले स्वर्णिम-युग के निर्माण में भी अथक मेहनत की। वे न केवल परमात्मा शिव के ज्ञान को देने के माध्यम बने बल्कि उनकी शिक्षाओं और नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में अपनाने वाले जीते-जागते आदर्श नमूने बने तथा सभी के सामने उन्होंने अनुकरणीय मिसाल कायम की।

वह शिव बाबा का सदा साथ (याद) रखते थे और विकार को जड़ मूल से उखाड़ने के लिये ही प्रयत्नशील रहते थे। इस प्रकार अन्तिम क्षण तक अथक मेहनत और ईश्वरीय सेवा करते हुए उन्होंने १८ जनवरी १९६९ को इस पार्थिव शरीर को त्याग दिया। वे सदा एक नव-विश्व और नव-विधान के रचयिता के रूप में याद किये जायेंगे तथा लोग उन्हें एक महान पारदर्शी व परम सन्त के रूप में याद करेंगे।

प्रगति का पंचम चरण (१९६९—१९८२)

इस काल में संस्था ने एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का रूप धारण किया। ब्रह्मा बाबा इस संस्था को विशाल व शक्तिशाली बनाने के निमित्त बने। अब यह अपने पाँव पर खड़ी हो चुकी थी। उन्होंने इसे विभिन्न रंग और रूप देकर निखारा था और बिना किसी आयु-वर्ग, धर्म-जाति व सम्प्रदाय के भेद-भाव के यह संस्था सेवा करने में समर्थ बन चुकी थी। इसमें 'विभिन्नता में एकता' देखी जा सकती थी क्योंकि यहाँ पर सभी धर्म-सम्प्रदाय व विचारधारा को मानने वाले बुद्धिजीवी लोग आने लगे थे। अब यह अद्भुत संस्था अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बनने लायक बन चुकी थी। अब यह विभिन्न प्रकार के आयोजन व कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक

करने में समर्थ हो चुकी थी। अब यह जन-जन को अनुभव कराने और व्यवहार में इस विचारधारा को अपनाने के लिये प्रेरित कर सकती थी कि यह विश्व एक परिवार है और हरेक को इसे पवित्र और स्नेह सम्पन्न बनाने में अपना सहयोग देना है।

इसलिये इस काल में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसके लिये सदा शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा की सूक्ष्म फरिश्ता रूप में मदद व मार्ग प्रदर्शना मिलती रही।

इस काल में बहुत-सी नई पुस्तकें हिन्दी व अन्य भाषाओं में छपीं जैसे कि गुजराती, मराठी, कन्नड़, बंगाली आदि-आदि। सन् १९७२ में ब्रह्माकुमारी बहनें तथा ब्रह्माकुमार भाईयों का एक ग्रुप लण्डन, नार्थ अमेरिका और साऊथ ईस्ट एशिया में गया जहाँ उन्होंने अनेक सम्मेलनों व विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया। इससे पहले नेपाल में स्थाई सेवा-केन्द्र खुल चुका था और अब लण्डन, हांगकांग में भी सेवा-केन्द्र खुल गये। फिर तो अन्य देशों से भी सेवा-केन्द्र खोलने के लिये निमन्त्रण आने लगे। अनेक व्यक्तियों ने, जिन्होंने दिल्ली, बम्बई, लण्डन, आबू व अन्य स्थानों पर राजयोग व ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा लाभ उठाया था। वे नये सेवा-केन्द्र खुलवाने के निमित्त बने। इस प्रकार १९८२ तक पश्चिमी जर्मनी, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, जामबिया, यू० एस० ए०, केन्या, मारिशस, ग्याना, बारबडोज, जापान, ट्रिनिडाड, इन्डोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, न्यूजीलैण्ड, दुबई, फ्रांस, कोलम्बिया, ब्राजील, आयरलैण्ड, मैक्सीको, स्पेन, स्वीडेन, हालैंड, बेलजियम, ग्रीस, अर्जनटायिना, पेरिच्यूगिल, हैंगरी, स्वीटजरलैण्ड, फीजि आदि देशों में सेवा-केन्द्र खुल चुके थे।

अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा आध्यात्मिक समारोह व मेलों का आयोजन भी इसी काल में किया गया। माऊँट आबू में सन् १९१० में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग सम्मेलन का आयोजन किया गया।

पहला 'नव-विश्व आध्यात्मिक मेला' रामलीला मैदान, नई दिल्ली में हुआ था। इस मेले में वैज्ञानिकों, न्यायविदों, शिक्षाविदों, महिलाओं और विद्यार्थियों के लिये अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। सभी राज्यों में स्थित सेवा-केन्द्रों द्वारा अलग-अलग पाण्डाल बनाये गये थे। इस प्रकार के मेले का आयोजन बाद में बम्बई, अहमदाबाद, बंगलौर और कलकत्ता में किया गया था। आने वाले जिज्ञासुओं को राजयोग का अभ्यास भी कराया जाता था। बम्बई में १९७६ में 'मानव दिव्यीकरण' आध्यात्मिक सम्मेलन, का आयोजन किया गया।

१९७७ में इस संस्था की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी दो मास के लिये विश्व के अनेक देशों में जहाँ पर इस संस्था के सेवा-केन्द्र थे गईं और वहाँ पर अनेक सम्मेलनों व आध्यात्मिक कार्यक्रमों में भाग लिया। १९७८ में 'मानव का भविष्य नामक विश्व सम्मेलन' का आयोजन नई दिल्ली के विज्ञान भवन में किया गया। इसका उद्घाटन तत्कालीन उप-राष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती ने किया। १९७८ से १९८० के बीच ऐसे १५ विशाल सम्मेलन १५ देशों में किये गये। इन्हीं दिनों में नई दिल्ली में न्यायविदों एवं आध्यात्मिक लोगों का स्नेह-मिलन का कार्यक्रम भी किया गया।

इन्दौर, वाराणसी, बंगलौर आदि शहरों में 'महाभारत और भगवत् गीता' पर विशाल सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया। बम्बई सेवा-केन्द्रों ने 'तिरुपति देवस्थान' के सहयोग से एक 'अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता' का भी आयोजन किया। जनवरी १९८० में बंगलौर के 'विधान सभा हाल' में 'मानव-रक्षा विश्व सम्मेलन' का आयोजन किया गया और इसी प्रकार की कान्फ्रेंस कनाडा, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में भी की गईं। १९७३ से १९८० के बीच में इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन में भी बड़े

पैमाने पर आध्यात्मिक मेले किये गये तथा राजयोग शिविरों का भी आयोजन किया गया। अहमदाबाद में १९८० में 'उद्योग में शान्ति प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया।

एक 'दस-सूत्री कार्यक्रम' और 'विश्व-कल्याण महोत्सव' का आयोजन १९८०-८१ में किया गया जिसमें सभी देश-विदेश के सेवा-केन्द्रों ने भाग लिया और 'महायज्ञ' की तरह इसमें अपनी-अपनी तन-मन-धन से आहुति डाली। लालकिला मैदान, नई दिल्ली में १९८१ में जो 'विश्व-कल्याण महोत्सव' हुआ था वह भी एक अभूतपूर्व घटना थी। इस अवसर पर लगभग १२ हजार भाई-बहनें सारे विश्व से एकत्रित हुए थे और एक विशाल शान्ति यात्रा अनेक सुन्दर व शिक्षाप्रद झाँकियों सहित निकाली गई थी जिसे अनेकानेक लोगों ने देखकर २६ जनवरी 'गणतन्त्र दिवस' पर निकलने वाली परेड की तरह ही बताया।

सन् १९८१ में इस संस्था की संयुक्त-मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी विश्व के अनेक देशों में गई और वहाँ पर स्थित सेवा-केन्द्रों का निरीक्षण किया तथा उन द्वारा आयोजित अनेक कार्यक्रमों में भाग लिया। इसी वर्ष में नेरोबी (केन्या) में 'शान्ति का मूल-स्थान' (Origin of Peace) नामक सम्मेलन का आयोजन किया गया और कलकत्ता के विक्टोरिया मैदान में 'राजयोग शान्ति महोत्सव' भी किया गया।

इस प्रकार यह समय ईश्वरीय सेवाओं के विस्तार का तथा ईश्वरीय ज्ञान के प्रसार का विश्व के कोने-कोने में विभिन्न साधनों द्वारा सेवा करने का एक बहुत ही सफलतापूर्वक अभियान रहा। १९८२ के अन्त तक इस संस्था के ८५० सेवा-केन्द्र और उप सेवा-केन्द्र स्थापित हो चुके थे। विदेशों के ३५ स्थानों पर ७० सेवा-केन्द्र स्थापित हुए थे।

इस चरण (युग) के अन्त तक ब्रह्माकुमारी विश्व-विद्यालय राष्ट्रसंघ के साथ जुड़ गई थी और उसने इसे गैरसरकारी संस्था के रूप में सलाहकार समिति में स्थान प्रदान किया था। अब यह संस्था एक विश्व व्यापी संस्था का रूप धारण कर चुकी थी और इसके लाखों अनुशासित व समर्पित सदस्य बन चुके थे जो हर क्षेत्र में अनुभवी थे और जिन्होंने अपनी कला, गुण व निपुणता द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को जन-जन तक तीव्रता से पहुँचाने में सहयोग दिया।

प्रगति का षष्ठम चरण (१९८३ से १९८५)

यह काल तीव्रता से विस्तार का था। इस चरण में अनेक नये सेवा-केन्द्र देश-विदेश में खुले और सेवाधारी बहन-भाईयों की संख्या भी काफी बढ़ चुकी थी। इस काल में सेवा-केन्द्रों की संख्या तथा मुख्यालय में भवन निर्माण के कार्य में ८०% वृद्धि हुई। माऊँट आबू (मुख्यालय) में 'ओम-शान्ति भवन' (यूनिवर्सल पीस हाल) के निर्माण का कार्य १९८३ के फरवरी मास में पूरा हुआ। इस हाल में ३००० लोगों के सुविधा से बैठने का इन्तजाम है तथा कार्यक्रम को ६ भाषाओं में भाषान्तर किया जा सकती है।

इसी चरण में भोजन बनाने और खिलाने की व्यवस्था में भी काफी सुधार हुआ और आवास-निवास की व्यवस्था में भी काफी वृद्धि हुई। १९८३ में पहला 'विश्व-शान्ति महासम्मेलन' इसी हाल में हुआ जिसमें ३००० देश-विदेश के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। न्यायविदों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, महिलाएँ, डाक्टरों तथा युवकों के लिये अलग-अलग वर्कशाप का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'यूनिवर्सल पीस चार्टर' को भी सर्व-सम्मति से पारित किया गया।

इस महासम्मेलन में अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अलावा संयुक्त राष्ट्रसंघ के सह-सचिव तथा कोस्टारीका में स्थित 'पीस यूनिवर्सिटी' के प्रधान ने भी भाग लिया। इसी बीच में संस्था को सूचित किया गया था कि उसे संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपनी सलाहकार समिति में प्रमुख स्थान प्रदान किया है।

इसी वर्ष दीदी मनमोहिनी, जो कि संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका थीं, ने अपने पार्थिव

शरीर का त्याग किया और दादी जानकी जी ने उनकी जिम्मेवारी व स्थान ग्रहण किया। दादी चन्द्रमणी व दादी निर्मल शान्ता को भी संस्था की संयुक्त प्रशासिका नियुक्त किया गया।

सन् १९८४ में दूसरा 'विश्व शान्ति महा-सम्मेलन' का आयोजन आबू में किया गया जिसका उद्घाटन नई दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा हुआ। इसमें दलाईलामा, मैडम अनवर सादात् (मिश्र के भूतपूर्व राष्ट्रपति की धर्मपत्नी), संयुक्त राष्ट्रसंघ के एसिस्टेंट सेक्रेटरी जनरल ओ० सी० जोना आदि विशिष्ट व्यक्तियों ने भी भाग लिया। इस बार कांफ्रेंस में दूसरा मसविदा (Document) 'पीस मैनिफेस्टों पारित किया गया।

इसी वर्ष में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की प्रमुख दादी प्रकाशमणी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में एन० जी० ओ० की कान्फ्रेंस में भाग लिया। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने उन्हें 'पीस मैडल' प्रदान करके सम्मानित किया। वहाँ पर दादी प्रकाशमणी जी संयुक्त राष्ट्रसंघ के सेक्रेटरी जनरल डा० पीराज डी० क्यूलर से भी मिलीं। उनके विदेशों के भ्रमण में अमेरिका और योरोप के अनेक देशों के मेयर व सरकार के विशिष्ट व्यक्तियों ने भी उन्हें सम्मानित किया।

इस संस्था के अनेक विशिष्ट सदस्य भी एशिया, आस्ट्रेलिया के अनेक देशों में गये। इस समय के बीच वहाँ पर अनेक महासम्मेलनों का आयोजन किया गया जिनमें से लण्डन में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जिसका नाम 'मानव की आत्मा' था, उल्लेखनीय है।

फरवरी १९८५ में तीसरा 'विश्व शान्ति महा-सम्मेलन' हुआ जिसका उद्घाटन भारत के उप-राष्ट्रपति ने किया तथा राजस्थान के राज्यपाल ने इसकी अध्यक्षता की।

माऊँट आबू में आयोजित 'युवक महोत्सव' का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने ३० मई १९८५ को किया और उस समय अनेक युवकों के ग्रुपस 'भारत एकता युवा पद-यात्रा' के लिये भारत के विभिन्न स्थानों से निकल पड़े। उन्होंने भारत के हजारों ग्रामों, कस्बों और शहरों से पद-यात्रा की और हजारों मील पैदल चलकर लाखों लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया तथा उन्हें बुराइयों और सामाजिक कुरीतियाँ छोड़ने की प्रेरणा दी।

कोलोन (वैस्ट जर्मनी) में एक महासम्मेलन का भी आयोजन किया गया। जिसका नाम था 'अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक कांग्रेस'। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के निमन्त्रण पर अनेक वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

इस प्रकार इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने अब विश्व के इतिहास में आध्यात्मिक क्षेत्र में महान् प्रगति की है और अपने प्रकार की देश तथा विदेश में ऐसी सबसे बड़ी आध्यात्मिक संस्था है जिसका संचालन महिलाओं द्वारा होता है। इसके अब विभिन्न 'क्षेत्रीय कार्यालय' सभी राज्यों में हैं तथा विभिन्न भाषाओं में विभिन्न धर्म व जाति के लोगों की सेवा करने में यह संस्था संलग्न है। इसके अब विशाल तौर पर अनेक विभाग हैं जिनका संचालन अनुभवी-बुद्धिवान व्यक्ति करते हैं और वे निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के लिये समर्पित हैं। अब हजारों-लाखों व्यक्ति इसकी शिक्षाओं से लाभ उठा रहे हैं और वे इसे बहुत ही आदर की दृष्टि से देखते और इसके कार्यों की दिल से प्रशंसा करते हैं। इस संस्था ने इन ५० वर्षों में अब एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर ली है और लोग इसे एक शक्तिशाली धार्मिक, नैतिक तथा सामाजिक सुधार लाने वाली संस्था समझते हैं। इसलिये समय-प्रति-समय वे इसे 'राष्ट्रीय-एकता' व 'शान्ति सम्मेलनों आदि के कार्यक्रमों में आमन्त्रित करते रहते हैं। यह संस्था अब 'राजयोग के अभ्यास' (Meditation) द्वारा 'आध्यात्मिक परिवर्तन' (अथवा क्रान्ति) लाने का ईश्वरीय सन्देश जन-जन तक पहुँचा रही है। अब यह संस्था 'सर्वोच्च नैतिकता' और

'पवित्रता' स्थापित करने के लिये तथा बुराइयों को जड़ से उखाड़ने के लिये युद्ध-स्तर पर कार्य करने में संलग्न है। अब यह संस्था अन्तर्राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय का रूप धारण कर चुकी है और अहिंसक और विकार-रहित समाज की स्थापना करने के लिये भ्रष्टाचार, अनैतिकता और अपवित्रता को समाप्त करके मानव-मात्र को श्रेष्ठता व दिव्यता के सद्गुणों से सम्पन्न करने में लगी हुई है। अनेक धार्मिक संस्थाओं और ऐसे विचार रखने वाले बुद्धि जीवियों को भी अब यह संस्था बुराइयाँ फैलाने वाली तथा तोड़-फोड़ करने वाली ताकतों के विरुद्ध आध्यात्मिक शक्ति द्वारा लड़ने को प्रेरित करती रहती है। अब यह संस्था न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि विश्व स्तर पर आध्यात्मिक-उत्थान लाने का महान कार्य कर रही है। वास्तव में ये सभी महान कार्य शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा तथा अन्य अनुभवी बुजुर्ग ब्रह्माकुमारी बहनें तथा भाइयों की मार्ग प्रदर्शना, सहयोग, आशीर्वाद तथा अथक मेहनत से ही सफल हो सके हैं। इन ब्रह्माकुमारी बहनों तथा भाइयों में कुछेक तो जीवित हैं तथा कुछेक बिना किसी मान-शान व नामाचार पाने की इच्छा के अपना पार्थिव शरीर त्याग चुके हैं। आइये हम इन महान आत्माओं को इस महान अवसर पर इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्वर्णिम जयन्ती समारोह मनाते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(शेष पृष्ठ २८ का)

है। इस तरह से गहरी इच्छा शक्ति से जीवन का नया और उत्तम रूप सामने आता जाता है। शा के अनुसार पहले इच्छा होती है, फिर कल्पना होती है और फिर निर्माण होता है। अतः बर्नार्ड शा का यह सिद्धान्त सिद्ध करता है कि मानव अपनी कल्पना और संकल्पों से प्रकृति को मोड़ सकता है। अपनी इच्छा के अनुसार ढाल सकता है। इसीलिए सर्व शक्तिवान पिता परमात्मा हम बच्चों को घर के साथ-साथ राजधानी (सुखधाम) को भी याद करने की शिक्षा देते हैं। प्रकृति अपने मालिक की सूक्ष्म धड़कनों को पूरा करने के लिए कृत संकल्प है। अतः हम सतयुगी दुनिया की उम्मीदवार आत्माओं को जहाँ अन्य चिन्तन करना आवश्यक है वहाँ तीसरे नेत्र से सतोप्रधान दुनिया को देखना और उसमें रमण करना भी अत्यन्त आवश्यक है तभी देवताई जीवन भू पर अवतरित होगा। ●

(शेष पृष्ठ ३५ का)

कि उसके अन्दर आत्म-विश्वास और दृढ़ता की कमी थी। इसी प्रकार यदि वह यह कहता है कि इस राजयोग (ध्यान) की विधि द्वारा मनुष्य में पूर्ण क्रान्ति आती है और आज की कठिन परिस्थितियों में राजयोग ठीक कसौटी पर उतरता है और सर्व समस्याओं का सन्तोषजनक समाधान करता है तो उसे संकीर्ण बुद्धि वाले व्यक्ति की संज्ञा दी जा सकती है या जो केवल अपना ही राग अलापता है। और यदि वह मन की इस भावना को दूसरों के सामने ठीक प्रकार से नहीं रखता कि योग की यह विधि जो परमात्मा द्वारा दिया हुआ उपहार है, को सर्व के समक्ष ठीक रीति नहीं रखता तो बाद में लोग उसे दोष लगायेंगे कि उसके विचारों की दृढ़ता की कमी के कारण अन्य लोग इस ईश्वरीय उपहार से वंचित रह गये। इसी प्रकार, यदि वह कहता है कि दिव्य गुणों की धारणा कराने में यहाँ पूरा ध्यान दिया जाता है और मनुष्य को सर्वगुण सम्पन्न बनाने पर जोर दिया जाता है तो उसे घमण्डी की संज्ञा दी जा सकती है। वह स्वयं महसूस करता है कि उसे मकानों की छतों पर चढ़कर चिल्ला-चिल्ला कर कहना चाहिये कि "सत्य की खोज करने वालो, आओ, ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति के लिये इस ज्ञानामृत का रसास्वादन, इन गुणों को धारण करो, परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर उसके समीप संग में आओ, क्यूंकि परमात्मा इस समय मानव का मार्ग-दर्शन कर रहा है"। स्वयं-परिवर्तन की इस विधि द्वारा विश्व-परिवर्तन हो सकता है जिसके फलस्वरूप सतयुग या स्वर्णिम युग रूपी सवेरा सृष्टि पर अवश्य ही आयेगा। □

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एक अद्वितीय, अनुपम आध्यात्मिक शैक्षणिक संस्था

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय जो कि एक आध्यात्मिक शैक्षणिक संस्था है उसका इस आध्यात्मिक शैक्षणिक क्षेत्र में कोई भी सादृश्य नहीं है।

इसके दैनिक कार्यकलाप प्रातः से आरम्भ हो जाते हैं। ब्रह्माकुमारियां और ब्रह्माकुमार जिन्होंने अपना सारा समय इस संस्था को समर्पित कर दिया है प्रातः ३-३० बजे उठ जाते है और ४ बजे से सामूहिक योगाभ्यास करते हैं। राजयोग का अभ्यास अनेक विद्यार्थी अपने घरों में भी करते हैं क्योंकि आध्यात्मिक पुरुषार्थ तथा आध्यात्मिक शिक्षा में और दैनिक कार्यक्रम में इस राजयोग का क्या महत्त्व है वे उसे भली भांति जानते हैं।

भारत के सभी केन्द्रों में प्रातःकाल की कक्षाएँ प्रातः ५.३० से ७.३० बजे तक लगती हैं। यदि इस संस्था की तुलना अन्य शैक्षणिक संस्थानों से करें तो इसें हम एक अद्वितीय संस्था ही पायेंगे क्योंकि इस समय कोई भी संस्थान प्रायः इतना जल्दी आरम्भ नहीं होता और न ही किसी संस्था में इस समय पर १,००,०००से भी अधिक की दैनिक उपस्थिति होती है। यदि हम दूसरी आध्यात्मिक और धार्मिक संस्थाओं से भी इसकी तुलना करें तब भी यह अपनी किस्म की अकेली संस्था है जहाँ सभी पुरुषार्थी चाहे उनकी कितनी भी आयु हो, कितनी भी शैक्षणिक योग्यता हो, और चाहे उनका समाज में कैसा भी पद (Status) क्यों न हो वह अपने आपको विद्यार्थी ही समझते हैं। वे प्रतिदिन निश्चित समय पर यहाँ आते हैं और उनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति लगाई जाती है। इसके अतिरिक्त यह ही केवल अपनी तरह की आध्यात्मिक संस्था है जहां सभी विद्यार्थी जो कुछ उन्हें सिखाया जाता है वे उसे लिखते हैं और उनसे प्रश्न पूछे जाते हैं और स्वयं विद्यार्थी भी विषय से सम्बन्धित प्रश्न पूछ सकते हैं। इस प्रकार कक्षा में विद्यार्थी सावधान और सक्रिय रहते हैं।

इससे भी अधिक केवल विद्यार्थी उस पढ़ने के समय सक्रिय नहीं रहते अपितु इसके बाद वे सारा दिन भी कार्यरत रहते हैं क्योंकि वे जो कुछ प्रातः पढ़ते हैं वे उसका अभ्यास करते हैं और ज्ञान और योग को दूसरों को भी जब उन्हें अवसर मिलता है सिखाते हैं।

इस प्रकार इस सस्था के १५०० केन्द्रों पर तो कक्षाएँ लगती हैं और दूसरे शैक्षणिक कार्यकलाप उन स्थानों पर और देश से बाहर भी करते हैं बल्कि इसका एक-एक विद्यार्थी ही स्वयं एक सेवा-केन्द्र के समान है जो स्वयं ऐसे लोगों के पास पहुँचता है जिनको ज्ञान, योग, शान्ति और पवित्र रहने की लालसा रहती है। इस प्रकार वे लोग लाभ प्राप्त करते हैं। इस प्रकार २८००० नव-युवक और लगभग १,१०,००० (युगल) विवाहित स्त्री-पुरुष अन्य लोगों को (बिना कुछ उनसे लिये) निःशुल्क ही नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं, उन्हें शिक्षित करते हैं। आत्मा विषयक रहस्यों और योग में रहकर सम्पूर्ण प्रसन्नता की भावनाओं के साथ वे इस कार्य को सेवा समझते हैं और अपने अनुभवों को दूसरों के साथ इस प्रकार सहर्ष बांटते हैं जैसे पावन कर्तव्य करने के बाद प्रसन्नता प्राप्त होती हो। यह सेवा वे मौखिक, लिखित, उदाहरण देकर चार्टों द्वारा, सलाइडस (Slides) द्वारा और इसके अतिरिक्त अपने व्यवहारिक जीवन से भी करते हैं। वे स्वेच्छा से १५०० समर्पित ब्रह्माकुमारियों और ब्रह्माकुमारों की अपने अमूल्य समय से कुछ समय देकर तन, मन, धन और शारीरिक और मानसिक योग्यताओं से सहायता करते हैं।

सम्पूर्ण समर्पित ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुमारियां

सारा दिन विभिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न रहती हैं।३२००० बच्चे भी किसी से कम नहीं हैं। अपनी सेवाएं आध्यात्मिक संगीत, ड्रामा, वार्तालाप नृत्य, तथा अन्य कार्य-कलापों में प्रदान करते हैं। इस प्रकार वे अपनी छोटी अवस्था में राजयोग के अभ्यास और अपनी कर्मेन्द्रियों पर स्वशासन से और अपने आध्यात्मिक गुणों के कारण अपने (माता-पिता को) अभिभावकों, अध्यापकों और सम्बन्धियों को प्रेरित करते हैं और इस प्रकार वे भी दूसरे व्यक्तियों की बहुमूल्य सेवा करते हैं। परिणाम स्वरूप यह संस्था भिन्न-भिन्न श्रेणियों और आयु के ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों के स्वयं के सक्रिय सहयोग से सारे कार्यक्रम और योजनाएँ बहुत कम खर्च किये लागू करती हैं जबकि अन्य संस्थाएं कार्यकत्ताओं की लम्बी सेना के और अधिक खर्चे के बिना ऐसे कार्यक्रम नहीं कर सकतीं। यह केवल उन्हीं विद्यार्थियों की उच्चतम बलिदान और समर्पण की भावना, उनके अनुशासन और उनका उत्साहवर्धक सहयोग और स्वयं-समर्पित स्वभाव के कारण सम्भव हो सका है। वे अपने आपको सेवाकार्य में इतना गहराई से व्यस्त कर लेते हैं जैसे कि यह उनका अपना कार्य हो। कितना भी असम्भव कार्य हो वह बहुत कम समय और बहुत कम कीमत पर उनके कारण यथा शीघ्र पूरा हो जाता है। अधिकतर लोग इस बात पर आश्चर्य-चकित हो जाते हैं कि इनके आर्थिक साधन क्या हैं और यह धन कहाँ से प्राप्त करते हैं। यदि वे थोड़ा ध्यान से देखने का कष्ट करें तो उन्हें विदित हो जायेगा कि यहाँ हर एक व्यक्ति कई-कई कार्य करता है और हर एक अपनी कुशलताओं और सेवाओं को पूरे मनोयोग से उसे सफल बनाने के लिये लगाता है जिससे स्वयं उसे और अन्य व्यक्तियों को प्रसन्नता प्राप्त हो सके। उसके अपने लिये और दूसरों के लिये किया हुआ कार्य शिक्षा और प्रेरणा का साधन बन सके।

यह सामहिक कार्य, अथवा कर्मयोग केवल अन्दर से प्रस्फुटित स्वशासन द्वारा ही सम्पूर्ण होता है। अतः यहाँ कोई बड़बड़ाता नहीं और न ही उनमें कोई तनाव होता है। और देखने वाले पाते हैं कि कार्यकर्त्ताओं का ध्यान उत्तम से उत्तम सेवा करने में होता है। एकता और प्यार, जैसा कि एक परिवार में होता है उनमें पाया जाता है।

विद्यालयों, महाविद्यालयों, कालेजों विश्व-विद्यालयों और पुस्तकालयों में २००० से भी अधिक आध्यात्मिक कार्यक्रम

उपरोक्त भावना से ओतप्रोत, वर्ष १९८५ में जो अभी समाप्त हुआ ही है सभी केन्द्र और उनके सभी विद्यार्थियों ने २,२७६ आध्यात्मिक कार्यक्रम विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्व-विद्यालयों में सम्पूर्ण किये हैं। उन्होंने वहाँ निबन्ध प्रतियोगिताएँ, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ और गीत, आध्यात्मिक आधार पर आधारित कुछ शक्षणिक सलाइडों द्वारा इस कार्य को पूर्ण किया है और जबकि कुछ विश्व-विद्यालयों में जैसे दिल्ली विश्व-विद्यालय, जामा मिलिया इस्लामिया हैदराबाद इत्यादि में यूथ सेमिनार का आयोजन किया गया है। जबकि विद्यालयों में वार्तालाप, कहानियों और प्रसिद्ध घटनाओं से आध्यात्मिक ज्ञान दिया गया है।

इसके अतिरिक्त विद्यालय और महाविद्यालय में जाने वाले छात्रों के लिये उनके १७२० पुस्त-कालयों के लिये आध्यात्मिक साहित्य की पुस्तकें प्रदान की गई हैं।

इस प्रकार विद्यार्थी समुदाय के नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के लिये प्रयत्न किये गये। इससे भी और अधिक कार्य किया गया होता यदि विभिन्न प्रदेशों के शिक्षा निदेशक, विश्व-विद्यालयों के उपकुलपति, महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य इत्यादि अधिक अवसर और सहयोग प्रदान करते।

११,२६५ राजयोग कैम्प (शिविर) और २,४१५ सामहिक योग कार्यक्रम

भारत के विभिन्न राज्यों में लोगों को योग का लाभ पहुँचाने हेतु लगभग ११,२६५ राजयोग

शिविरों का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त २,४१५ सामूहिक योग विभिन्न अवसरों पर किये गये। बहुत से लोग जिन्होंने इस संस्था के केन्द्रों को नहीं देखा और न ही उन्हें योग क्या है कभी समझने का अवसर मिला है, उन्हें इस प्रकार योग का संक्षिप्त परिचय प्राप्त हुआ। इन योग-केन्द्रों और शिविरों में वातावरण सम्पूर्ण शान्त, पवित्र और अनुशासनयुक्त था। राजयोग के उद्देश्य बताकर, उसके पीछे क्या सिद्धान्त हैं राजयोग का लोगों को अभ्यास कराया गया! थोड़े-थोड़े विराम के बाद उन्हें पुनः राजयोग कराया गया। इस अभ्यास के लिये प्रेरणादायक संगीत, लाल प्रकाश और गीतों के कैसेट प्रयोग किये गये। अधिकतर श्रोताओं ने शान्ति का थोड़ा अनुभव, अशरीरी बनने का, तनाव मुक्त होने का और कुछ व्यक्तियों को प्रकाश किरणों का थोड़े समय में अनुभव हुआ।

७५० गोष्ठियां और सम्मेलन

प्राप्त सूचनाओं के अनुसार देश और विदेशों में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा ७५० सेमिनार और सम्मेलन आयोजित किए गए। इसमें विभिन्न संस्थाओं से योग्य, शिक्षित व्यक्तियों ने, विभिन्न पेशों के प्रतिनिधियों ने और विभिन्न समाज के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने भाग लिया।

इन सम्मेलनों ने लोगों की अपनी संकुचित दृष्टि को विशाल बनाने में, आपस में सद्भावना पैदा करने में, अनुशासनात्मक आपसी व्यवहार करने में और अपनी शिक्षा और योग्यता को विस्तीर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वाभाविक ही इन सम्मेलनों ने न केवल लोगों को शिक्षित करने का कार्य किया अपितु सब शैक्षणिक क्षेत्रों में आध्यात्मिक पुट भी दिया। इस प्रकार शिक्षा शास्त्रियों, डाक्टरों, न्यायविदों इत्यादि ने अपने-अपने क्षेत्रों में आध्यात्मिकता का समावेश कर अपने क्षेत्र को पवित्र, स्वच्छ और अधिक न्यायप्रिय बनाया। जिसका परिणाम विभिन्न व्यवसाय के लोगों ने अपने मुक्त विचारों को शांतिपूर्ण ढंग से और अधिक एक-दूसरे को मानसिक रूप से समझ कर और आध्यात्मिक रूप से एक-दूसरे के अति निकट होकर ग्रहण किया। सभी ने पुनः इन अनुभवों को प्राप्त करने की अभिलाषा प्रकट की।

७५ आध्यात्मिक मेलों और ६४२५ प्रदर्शनियां

वर्ष १९८५ के अन्त तक विभिन्न सेवा-केन्द्रों से प्राप्त सूचना के अनुसार ६४२५ शैक्षणिक प्रदर्शनियां, और ७५ आध्यात्मिक मेले जिनके साथ भी विशाल प्रदर्शनियां जुड़ी हुई थीं आयोजित की गईं। जिनके द्वारा लोगों को, आध्यात्मिक तथ्यों, मानव मूल्यों, सामाजिक परिवर्तनों और आत्मा की जन्मों की कहानी को कलात्मक ढंग से दिग्दर्शन कराया गया। इन प्रदर्शनियों में उपरोक्त विभिन्न तथ्यों पर पैविलयन बनाये गये थे जहाँ ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के छात्रों ने अपनी सेवा गाइड के रूप में निःशुल्क प्रदान की। उन्होंने कुछ लोगों के समूहों में एकत्र कर अपने आध्यात्मिक अनुभवों सहित चित्रों में दिये गये विचारों को समझाया। ये प्रदर्शनियाँ, उत्सव और मेले निःशुल्क थे। इसमें कोई टिकट नहीं खरीदना पड़ता था। यह एक विशाल आयोजन था जिसको संस्था ने स्वयंसेवी विद्यार्थियों द्वारा सम्पूर्ण किया।

लाखों लोग जो अपने परिवार और मित्रों सहित इन मेलों को देखने आये उनको एक सन्देश के साथ भविष्य में आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने का निमन्त्रण भी प्राप्त हुआ। कम से कम उन्हें एक या दो विचारों ने अवश्य प्रभावित किया होगा जिसके कारण उन्होंने अपना समय दिया और पुनः वे दूसरी बार भी आये। उनके मन को अवश्य अधिक आध्यात्मिक खुशी मिली और उनकी आंखों को कलात्मक आध्यात्मिक ज्ञान देखने को मिला। उन्होंने यहाँ ऐसा वातावरण पाया जहाँ वे पुनः अपने आपको अभिव्यक्त कर सकें। ऐसे मेलों और प्रदर्शनियों ने ऐसी सामूहिक शिक्षा प्रदान की जो कि विद्यालयों और विश्व-विद्यालयों की शिक्षा

से भिन्न और औपचारिक शिक्षा से अलग किस्म की है।

यही है वह आध्यात्मिक संस्था जो बिना किसी राजकीय सहायता और बिना किसी पब्लिक के चन्दे से निःशुल्क, लोगों को ऊँचे स्तर की नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा देती है।

भाषण और स्लाइड शोज़

वार्षिक विवरण (रिपोर्ट) जिसको पूरा किया जा रहा है प्रकट करती है कि वर्ष १९८५ के अन्त तक ७,६४० सलाइड शोज़ और फिल्म शोज़ दिखाये जा चुके हैं। दूसरी संस्थाओं के निमन्त्रण पर कुछ भाषण वहाँ आयोजित किये गये और कुछ भाषण अपनी संस्था में अपने केन्द्रों पर देश और विदेशों में आयोजित किये गए। यदि हम उन भाषणों को भी सम्मिलित करें जो अन्य सभी अवसरों पर दिये गये थे तो उनका योग और भी उपरोक्त संख्या से अधिक होगा। ये भाषण अनेक विशिष्ट विषयों पर थे जैसा कि पुनः अवतरण, तनाव, विज्ञान और आध्यात्मिकता, स्वास्थ्य, राजयोग की विधि और लक्ष्य, योग और औषधि आदि-आदि। कुछ अवसरों पर राजयोग पर उन लोगों को फिल्म भी दिखाई गई जो उनमें रुचि रखते थे। प्रोजेक्टर और सलाइडों द्वारा मानव के सामाजिक, धार्मिक उत्थान पतन की ५००० वर्ष की कहानी, शरीर और आत्मा का सम्बन्ध, परमात्मा के कार्य और कर्त्तव्य इत्यादि को प्रदर्शित किया गया। यह भाषण और सलाइड शोज़ ज्ञानवर्धक और उन्नति की ओर अग्रसर करने वाले थे। इन द्वारा नया प्रकाश और नया आध्यात्मिक जीवन लोगों को प्राप्त हुआ। यह सब कुछ वास्तविकता पर आधारित था। भाषणों के बाद प्रश्नोत्तर करने के समय में श्रोताओं को और विस्तार से उस ज्ञान को प्राप्त करने का अवसर मिला।

सलाइड शोज़ जिनका प्रयोग अधिक ज्ञान की सूचनार्थ माध्यम के रूप में प्रयोग किया गया और जिसके साथ कामन्ट्री भी दी गयी बहुत लाभदायक सिद्ध हुए। उनके विभिन्न सुन्दर चित्रों ने लोगों के मन, मस्तिष्क, आँखों और कानों पर मनमोहक और अविनाशी प्रभाव डाला? इस प्रकार गूढ़ विचारों को भी बड़े सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया। उन्होंने शिक्षा के साथ केवल विषय को ही रुचिप्रद नहीं बनाया अपितु लोगों का भरपूर मनोरंजन भी किया। इन सभी शैक्षणिक साधनों और सामग्री का प्रयोग इस संस्था द्वारा प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान की रुचि को कितना प्रकट करता है यह सभी के जानने का विषय है।

१५०० शान्ति यात्राएँ

इस संस्था ने वर्ष १९८५ में १५०० शान्ति यात्राओं का विभिन्न अवसरों पर आयोजन किया जिनमें कुछ रंगीन झांकियों द्वारा आध्यात्मिक भावनाओं और नैतिक सिद्धान्तों, सामाजिक दायित्वों को दर्शाया गया। एक झांकी ऐसी थी जिसमें राष्ट्रीय एकता और धार्मिक सद्भावना के रूप में एक फूलों के गुलदस्ते में विभिन्न धर्म के फूल सजाये गये थे जो भिन्नता में सुन्दरता दर्शा रही थी। विभिन्न धर्मों के फूल ऐसे लग रहे थे जैसे एक बाप के अनेक बच्चे हों। एक और ऐसी झांकी थी जिसमें शराब और सिगरेट के दुष्प्रभाव दिखाये गये थे और उनसे छुटकारे के उपाय भी सुझाये गये थे। इसके अतिरिक्त एक और झांकी थी जिसमें सभी आत्माओं के पिता परमपिता परमेश्वर को दर्शाया गया था।

जिन पद यात्रियों ने इस यात्रा में भाग लिया उन्होंने कुछ ऐसी तख्तियाँ उठाई हुई थीं जिसमें कुछ बड़े आकर्षक नीति वचन और दिल को छू लेने वाले नारे लिखे थे जो स्वयं के और सामाजिक परिवर्तन के लिये बहुत उपयोगी थे। कुछ दूसरे पदयात्री इस प्रकार के नारे बुलन्द कर रहे थे जिनके द्वारा पास से गुजरने वाले यात्री इस संस्था के सिद्धान्तों और मूल्यों की झांकी का अनुमान कर सकें और लाभ प्राप्त कर सकें।

साप्ताहिक पाठ्यक्रम

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के सभी

केन्द्र न केवल प्रातः और सायं सक्रिय रहते हैं, अपितु उनकी गतिविधि सारा दिन चलती रहती है। नियमित विद्यार्थी जो प्रतिदिन परमात्म ज्ञान की चर्चा अपने मित्रों, सम्बन्धियों, साथियों और पड़ोसियों इत्यादि से करते हैं, उनको सुझाव देते हैं कि वे परमात्म ज्ञान और योग का साप्ताहिक कोर्स अवश्य करें। दूसरे उन व्यक्तियों को जिन्हें कभी प्रदर्शनी, मेला या राजयोग शिविर देखने का अवसर मिला है वे भी केन्द्रों में साप्ताहिक कोर्स लेने के लिये आते हैं। इस प्रकार उनको इस संक्षिप्त कोर्स का ज्ञान उन्हीं द्वारा निश्चित समय पर उनकी सुविधा अनुसार कराया जाता है अथवा जब ब्रह्माकुमारी शिक्षिका के पास समय उपलब्ध होता है।

इस प्रकार की सेवा सभी केन्द्रों पर लगभग वर्ष-पर्यन्त चलती रहती है। पिछले वर्ष हज़ारों लोगों ने एक सप्ताह का कोर्स केन्द्रों पर या पत्राचार द्वारा किया। उनमें से कुछ व्यक्तियों ने बाद में नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रह कर विस्तार से परमात्म ज्ञान और राजयोग की शिक्षा प्राप्त की और उसे भली भाँति उसकी विधि और सिद्धान्तों को समझने में समर्थ हो सके। यह एक सप्ताह का कोर्स उनके जीवन में एक परिवर्तन बिन्दु साबित हुआ और वे इस साप्ताहिक कोर्स को सुनहरी सप्ताह मानने में नहीं हिचकिचाये जो उनके जीवन में एक सुनहरी क्रान्ति लाया।

८,५६० ग्रामों में सेवा और निरन्तर पदयात्रा

पिछले वर्ष भारत के प्रदेशों के ८,५६० कस्बों और ग्रामों में ईश्वरीय सेवा की गई। इस कार्य के लिये एक विशेष प्रदर्शनी का निर्माण ग्रामीण लोगों के लिये किया गया! नवयुवकों की टोलियाँ जिनमें बहनें और भाई भी थे उन्होंने हज़ारों मील पैदल यात्रा द्वारा एक राज्य से दूसरे राज्य तक, ग्रामीण लोगों को प्रदर्शनियों, और भाषणों द्वारा सामाजिक बुराइयों और अनैतिक कार्यों को छोड़ने के लिये प्रेरित और प्रोत्साहित किया। उन्होंने गांव के लोगों को गांव की चौपालों और स्कूलों में इकट्ठा करके भाषण दिये। इस कार्य में उन्हें गांव के सरपंचों, ब्लाक डिवलपमैंट अधिकारियों, सरकारी कर्मचारियों, ज़िला अधिकारियों और यहाँ तक कि ग्रामों के लोगों का भरपूर सहयोग मिला। यह एक आध्यात्मिक सेवा की योजना का महत्वपूर्ण कार्य था जिसके लिये सभी केन्द्रों ने इस वर्ष पूरे ध्यान से किया। बारह युवा पदयात्रियों की टोलियाँ भारत के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों से आरम्भ हुईं और सैकड़ों एवं हज़ारों गांवों से गुजरती हुई एक विशाल सभा में दिल्ली में आकर मिल गईं। एक टोली दक्षिण से, कन्याकुमारी से आरम्भ हुई और उत्तर से दूसरी टोलियाँ, लेह-लद्दाख (काश्मीर) धर्मशाला और अमृतसर से चलीं। एक अन्य टोली सोमनाथ (पश्चिम) से चली और एक आसाम से। एक नवयुवकों के समूह ने अपनी पदयात्रा बम्बई से आरम्भ की तो दूसरे ने पुरी से। कुछ पदयात्री तो भारत नेपाल सीमा के पोखरा स्थान से रवाना हुए। एक समूह तो वेलगाँव से साइकलों से चला तो अन्य पदयात्री माऊंट आबू से रवाना हुए। दिल्ली रैली के पश्चात ये टोलियाँ विभिन्न रास्तों द्वारा अपने गन्तव्य स्थानों पर पहुँचीं।

यह टोलियां कुछ बड़े-बड़े नगरों से भी गुजरीं। रास्ते में आने वाले लाखों लोगों को आध्यात्मिक सन्देश देकर इन्होंने अनन्य सेवा की।

कैदियों, तथा नारी शरणस्थलों में महिलाओं की ईश्वरीय सेवा

जेल अधिकारियों के भरपूर सहयोग के कारण ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों ने जेलों में ईश्वरीय सन्देश दिया। जेलों में उन्होंने स्त्री और पुरुष कैदियों को राखी बांधी। उन्हें कुछ आध्यात्मिक रत्न और मिठाइयाँ भी दीं! अन्य दिनों में उन्होंने सलाइड शोज़ प्रदर्शनियों और आध्यात्मिक वार्तालाप द्वारा उनकी रूहानी सेवा की जिसका परिणाम प्रशंसनीय रहा। १९८५ वर्ष में ४३५ बार जेलों में हज़ारों कैदियों से सम्पर्क किया गया जिनसे उनको काफी लाभ प्राप्त हुआ। उनमें से

कुछ कैदी जो अच्छे परिवारों से सम्बन्धित थे और जिन्होंने पहली बार अपराध किया था, पश्चाताप किया और स्वीकार किया कि उन्होंने यह अपराध भावुकता वश किया है। ये कैदी और इस प्रकार के अन्य लोगों ने ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों की बातों को ध्यान से सुना और उन शिक्षाओं को धारण करने की इच्छा व्यक्त की। वास्तव में कठिनाई इस बात में प्रतीत हुई कि ब्रह्माकुमारियां पुनः पुनः जेलों में सेवा के लिये नहीं जा सकीं !

स्त्रियों के शरणास्थलों में भी कई बार ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों को जाने का अवसर मिला, जहाँ यह पाया गया कि कुछ स्त्रियों का सुधार किया जा सकता है चाहे यह लम्बा रास्ता है, क्योंकि इसमें विभिन्न सामाजिक और पुनर्वास संस्थाओं के पूर्ण सहयोग की परमावश्यकता है।

विकलांग लोगों की सेवा

विकलांग लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग का अभ्यास का लाभ भी दिया गया। विकलांग लोगों के लिये बनाये गये विकलांग स्थलों में वर्ष भर में ४८८ बार जाना हुआ। आध्यात्मिक ज्ञान के अतिरिक्त, कुछ धनवान लोगों द्वारा दी गई भेंट में वस्तुएँ ब्रह्माकुमारियों द्वारा उन विकलांग भाई-बहनों को दी गईं। इन लोगों से निरंतर सम्पर्क बना रहे इसके लिये विशेष और विभिन्न उत्सवों और मेलों के लिये अन्ध महाविद्यालय के बैण्ड और संगीत बजाने वाले लोगों को अनेक अवसरों पर आमंत्रित किया गया।

हस्पतालों में सेवा

ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों ने हस्पताल में डाक्टरों, मैडिकल स्टाफ के लिये साहित्य भी बाँटा और मौखिक सन्देश दिया ! हस्पतालों में मरीज़ों की सेवा भी की गई। यह पाया गया कि बहुत से मरीज़ जिनके पास समय है और सुनने का इरादा रखते हैं उन्हें इन शिक्षाओं से लाभ पहुँचाया गया जिसके कारण उन्हें कुछ सीमा तक दर्द और दुश्चिन्ताओं से मुक्ति का अनुभव हुआ। यह तब सम्भव हुआ जब उन्हें राजयोग का अभ्यास कराया गया और सुनहरी विचार दिये गये।

शोक संतप्त परिवारों की सेवा

ब्रह्माकुमारियों को उन स्थानों पर भी बुलाया गया जहाँ बड़ी संख्या में लोग, मृतक के रिश्तेदारों को सांत्वना देने के लिये एकत्रित होते हैं। ऐसे अवसरों पर ऐसा पाया गया कि अधिकतर लोग जिज्ञासु होते हैं और अनेक प्रश्न पूछते हैं। वे जानना चाहते हैं कि जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो कहाँ जाती है ? वे यह भी जानना चाहते हैं कि वे पवित्र और तनाव मुक्त जीवन कैसे जी सकते हैं ? वे ऐसे समय निराशावादी होते हैं और सोचते हैं कि इन्हें अपने आपको अन्तिम समय से पहले ही सुधारना चाहिये। इस प्रकार मृतक के प्रथम दिन जब उसे जलाया जाता है, चौथे दिन या तेरहवे दिन जब उसकी क्रिया की जाती है जब बहुत लोग अन्तिम क्रिया पर प्रार्थना के लिये इकट्ठे होते है उन्हें परमात्मा का सन्देश दिया गया।

आध्यात्मिक संग्रहालय द्वारा सेवा

सारे भारत में इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के १२५ आध्यात्मिक संग्रहालय हैं। इनमें कुछ चित्र, मिट्टी के माडल और कलात्मक मूर्तियाँ हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं। बहुत से लोग शिवरात्री और जन्माष्टमी जैसे अवसरों पर इनको देखने के लिये आते हैं। ये स्थाई संग्रहालय हैं। पिछले वर्ष इनको हज़ारों लोगों ने देखा।

वास्तव में, मन्दिरों, घरों में जहां पड़ोसी और सम्बन्धी किसी कारण इकट्ठे होते हैं, पवित्र यात्रा स्थानों पर जैसे हरिद्वार, वाराणसी, चौमण्डी हिल आदि, कुम्भ के मेलों पर रक्षाबन्धन के त्यौहार के समय ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा आध्यात्मिक सेवा की जाती है और की गई।

समाचारपत्र, आकाशवाणी और दूरदर्शन

पिछले वर्ष, समाचारपत्रों, आकाशवाणी और

दूरदर्शन द्वारा ईश्वरीयविश्व-विद्यालय की सेवा का समाचार प्रसारित हुआ। ६५४५ समाचार विवरण विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्रों और राष्ट्रीय समाचारपत्रों में छपे। आकाशवाणी द्वारा ९८६ समाचार प्रसारित किये गये जबकि दूरदर्शन द्वारा २२२ महत्वपूर्ण घटनाएं दिखाई गईं। इस प्रकार लाखों लोगों ने समाचार सुने।

उपरोक्त बातों को दृष्टिगत रखते हुए यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई बराबर नहीं।

○

"आ चल ! ले चलूं"

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

सुदूर ! वो जो हैं न पर्वतमाला आरावली की···
गोदी में उसकी हंसों की बसती है
नित-नित सभा वहाँ इन्द्रप्रस्थ की लगती है
आ चल ! ले चलूं, है वहाँ शान्ति का संसार।
है वहाँ शान्ति सम्मेलन अभी फिर इस बार ॥
सुदूर ! वो जो है न हंसों की बसती·····
गोदी में उसकी है ओमशान्ति हॉल,
इन्द्रप्रस्थ की परियाँ बजाएँ शान्ति का साज,
आ चल ! ले चलूं है वहाँ शान्ति का संसार।
प्रतिनिधि विश्व प्रख्यात जो, रहे वहाँ पधार ॥
सुदूर वो जो हैं न परियाँ·····
पीतीं अमृत, करतीं दिव्य गुणों से आत्माओं का शृंगार।
ज्ञान योग के पंख लगा के उड़ती आकाश के पार ॥
आ चल ! ले चलूं है वहाँ शान्ति का संसार।
सिन्धी सम्मेलन भी है रखा वहाँ इस बार ॥
सुदूर ! वहाँ जब अमृत कलश छलकता है,
रूहें भरतीं सुगन्ध अन्दर का विष मरता है;
विष तोड़क शिव पिता का मिलता अनुपम प्यार।
आ चल ! ले चलूं है वहाँ शान्ति का संसार ॥
ओ भटके मानव नादान ! करे शान्ति उधर स्वागत गान
यह वर्ष, शान्ति वर्ष, स्वर्णिम युग का प्रवेश द्वार।
आ चल ! ले चलूं है वहाँ शान्ति का संसार ॥

कहानी

सतयुग ही स्वर्णयुग और उसी के लिए यह स्वर्ण जयन्ती

ब्र० कु० चक्रधारी, देहली

बच्चो, कभी सोचा आपने कि सतयुग को स्वर्ण युग (Golden Age) क्यों कहा जाता है और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय अब स्वर्ण जयन्ती (Golden Jubilee) क्यों मना रहा है ? लो इसके विषय में एक कहानी सुन लो।

सेठ भोलानाथ करोड़ीलाल का एक लड़का था, जिसका नाम था सज्जन कुमार। परन्तु सज्जन कुमार कुसंग में पड़ कर वास्तव में दुर्जन कुमार हो गया था। सेठजी चाहते थे कि यह किसी तरह सुधर जाये परन्तु वह दिनोंदिन बिगड़ता जाता था। एक दिन सेठजी ने किसी महात्मा जी से कहा—"महाराज, आप मेरे बच्चों को सुधारने में मुझे सहयोग दीजिए। उसके लिए मैं काफी धन खर्चने को तैयार हूँ।"

महात्मा जी ने कहा—"सेठजी, धन आपका कोशिश हमारी और पुरुषार्थ एवं भाग्य बच्चों का। ठीक है, हम कोशिश करते हैं। महात्मा जी सुधारने में बड़े प्रतापी थे। उन्होंने युक्ति सोची कि सेठ भोलानाथ करोड़ी लाल के बच्चे को कैसे सुधारा जाय। उन्होंने अपने आश्रम के निकट कुछेक खड्डे थोड़ी-थोड़ी दूर खुदवा दिये और उनमें ही सेठजी का कुछ-कुछ धन दबा दिया। इधर सेठजी ने अपने पुत्र सज्जन कुमार को कहा—"बेटा, आज से बूढ़े बाबा के पास जाया करो; तुम्हारा इससे भला ही होगा।"

सेठजी का बेटा बूढ़े बाबा के पास जा पहुँचा। बाबा ने उसे प्रेम से बिठाया। उससे पूछा कि बेटा ठीक-ठाक हो, कुछ चाहिए तो बोलो।

सज्जन कुमार बोला—"महाराज, अपने पास मिलने-जुलने और खेलने-कूदने के लिए दोस्त तो हैं परन्तु पैसा पल्ले में नहीं है। आपका आशीर्वाद हो कि पैसा कुछ मिल जाय।"

बूढ़े बाबा बोले—"अच्छा, ऐसा करो कि सामने जो वृक्ष है, उसके नीचे खोदो तो तुम्हें पैसा मिल जायेगा।"

सज्जन कुमार ने खड्डा खोदा और वहाँ पैसा दबा हुआ पाया। वहाँ दस रुपये पाकर वह बहुत खुश हुआ। बूढ़े बाबा के प्रति उसके मन में स्नेह पैदा हुआ।

दो-तीन दिन के बाद वह फिर बोला—"बाबा जी, कुछ और पैसा मिलेगा ?"

बाबा जी ने कहा—"मिलेगा तो सही परन्तु पहले एक वचन दो। बोलो, वचन दोगे और उस वचन का पालन करोगे ?"

सज्जन कुमार बोला—"हाँ, वचन दूँगा और उसका पालन भी करूँगा।"

बाबा जी बोले—"बेटा सत्य का पालन किया करो। सत्य के मार्ग को कभी न छोड़ना। सत्य को सदा अपने संग रखना। ठीक है, बेटा ?"

सज्जन कुमार बोला—"हाँ बाबा। मैं ऐसा ही किया करूँगा। सत्य को नहीं छोड़ूँगा। आज से सत्य मेरा व्रत हुआ।"

बाबा बहुत खुश हुए कि अब इसके सुधारने की युक्ति सफल हुई। उन्होंने कहा—"बेटा, वह देखो, वह जो वृक्ष उस ओर को दिखाई दे रहा है, उससे १० फुट दक्षिण पश्चिम की ओर तुम खड्डा खोदो तो तुम्हें धन मिलेगा।"

सज्जन कुमार ने ऐसा ही किया। उसने खड्डा खोदा और उसे २५ रुपये प्राप्त हुए। वह भी बहुत खुश हुआ और धन लेकर अपने दोस्तों के पास गया जो दुर्जन थे। उस दिन उन सभी की योजना किसी के घर में चोरी करने की थी। उन्होंने अपने दोस्त सज्जन कुमार को भी अमुक समय अमुक स्थान पर पहुँचने के लिए कहा।

समय समीप आने पर सज्जन कुमार उस

स्थान की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे एक सिपाही मिला। उसने सज्जन कुमार से पूछ लिया कि वह कहाँ जा रहा है? सज्जन कुमार ने सत्य बोलते हुए कहा—"दोस्तों के साथ आज चोरी करने जा रहा हूँ।"

सिपाही हैरान हो गया। उसने फिर पूछा कि कहाँ चोरी करने का विचार है?

सज्जन कुमार ने यह भी बता दिया कि कहाँ चोरी करने की योजना है।

इसका परिणाम यह हुआ कि सिपाही अन्य सिपाहियों को लेकर वहाँ पहले ही से पहुँच कर छिप खड़ा हुआ और जब वे सभी चोरी करने के लिए आये तो उन्हें पकड़ लिया गया। सभी को मालम हो गया कि सज्जन कुमार ने ही सिपाहियों को सत्य बता दिया था। सज्जन कुमार ने उन्हें कह दिया कि वह वचन दे चुका है और इसलिए अब वह सत्य नहीं छोड़ेगा।

सज्जन कुमार को सिपाहियों ने सत्यता के कारण छोड़ दिया था। परन्तु उसने कहा कि या तो उसके दोस्तों को भी छोड़ दिया जाये वरना उसे भी जेल में बन्द कर दिया जाये। उसके इस आग्रह के कारण अबकी बार सिपाहियों ने अन्य चोरों को भी छोड़ दिया।

परन्तु चोरों ने यह सोच कर कि अब सज्जन कुमार को अपने साथ रखना या ले जाना भयानक है, उन्होंने सज्जन कुमार को अपने ग्रुप से निकाल दिया।

अच्छा ही तो हुआ। सज्जन अब बूढ़े बाबा के पास ही ज्यादा बैठने लगा और बुरी संगत छूटने से तथा सत्य का संग होने से उसका व्यथ का खर्च भी बच गया और वह सुधर गया। इसका फल यह हुआ कि सेठ भोलानाथ करोड़ी लाल ने अपना सोना और सम्पत्ति का उत्तराधिकार उसे दे दिया। देखिये सत्य ही से वह सज्जन कुमार जो दुर्जन कुमार बन गया था, अब सच्चे अर्थ में सज्जन कुमार भी बन गया और सोना-पति भी।

इसी प्रकार परमपिता परमात्मा, जिन्हें भी 'भोलानाथ' शिव कहा जाता है और जो भी करोड़ों-अरबों की सम्पत्ति देने वाले हैं, आत्माओं रूपी बच्चों को दुर्जन कुमार बना देखकर उनके सुधार के लिए बूढ़े ब्रह्मा बाबा को निमित्त बनाते हैं। धन तो ब्रह्मा बाबा को यह भोलानाथ शिव ही देते हैं जिनकी ये सभी आत्मायें करोड़ों लाल हैं। यह धन 'ज्ञान धन' है। सत्य का संग करने वाला, कुसंग को छोड़ने वाला, बूढ़े बाबा की बात को मानकर सत्य (ब्रह्मचर्य) का व्रत लेने वाला, सत्य (सतोगुण) का पालन करने वाला ही बुराइयों से बचकर सच्चे अर्थ में 'सज्जन कुमार' बन जाता है—इसे ही 'ब्रह्माकुमार' कहते हैं। वह ही करोड़ों, नहीं-नहीं पदमापदमों की सतयुगी सम्पत्ति का अधिकारी होता है।

अतः बच्चो, सत्य स्वरूप परमात्मा का संग करने से, ब्रह्मचर्य रूपी सत्य का पालन करने से, सतोगुण रूपी सत्य को धारण करने से, सत्यता आदि व्रत को निभाने से, जैसे कि स्वयं को आत्मा मानने रूप सत्य का पालन करने तथा स्वयं को शरीर मानने रूपी झूठ को छोड़ने से **"सतयुग"** आता है। उस सतयुग में सत्य में निष्ठ हुई आत्माओं को सोने के महल मिलते हैं। अतः सतयुग ही 'स्वर्ण युग' है। उस समय के भारत को "सोने की चिड़िया" कहते हैं।

उस स्वर्णिम युग को लाने का पुरुषार्थ करने में अग्रगणी जो आत्माएँ बहनें और भाई—इस प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में हैं, जिन्हें ५० वर्ष यह उत्तम सेवा करते हुए हैं, उनकी अब स्वर्ण जयन्ती (Golden jubilee) है। आओ इससे प्रेरणा लेकर हम भी स्वयं को अर्थात् आत्मन् को स्वर्णिम बनाएँ, पत्थर से पारस बनाएँ!

○

कार्कला—हुबली से निकली युवा साईकल यात्रा के स्वगत कार्यक्रम में मंच पर सभा अध्यक्ष भाषण करते हुए।

भण्डारा में १८ जनवरी शान्ति दिवस समारोह में भ्राता पी. टी. माडीकर भाषण करते हुए।

जयपुर राजा पार्क : आदर्श विद्या मन्दिर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा आयोजित गीता जयन्ति समारोह के समापन कार्यक्रम में ब्र. कु. पूनम बहिन अध्यक्षता करते हुए।

उदगीर सेवा केन्द्र पर भ्राता वसंतराव मूढे को ब्र. कु. महानंदा चित्रों पर समझाते हुए।

पायर्डी में हुए १८ जनवरी को कार्यक्रम में भ्रा. मा. माधवराव निन्हाली (स्वा. सैनिक, एम्स. एम. एल. से) भाषण करते हुए।

हुबली में ब्र. कु. बसवराज जी १८ जनवरी को पिताश्री रोलिंग शील्ड प्रदान करते हुए।

युवा पद यात्रा के अन्तर्गत मुलण्ड (बम्बई) सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित कार्यक्रम में ब्र. कु. ललिता प्रवचन करते हुए।

कटक-भुवनेश्वर के आर्च बिशप आदरणीय रपहेल चीनथ तथा फादर मेरियन शीलशक एस. वी. डी. पेरिश, प्रीस्ट केथोलिक चर्च पुरी को गोल्डन जुबली का निमन्त्रण देती हुई ब्र. कु. निरुपमा तथा प्रीतमा।

मेहाल में बी. के. एम. गौडा सम्मति लिखते हुए और पदयात्री भाई बहिनें खड़े हैं।

भारत एकता युवा साईकल यात्रा के बेलगाम में स्वा तथा समाप्ति समारोह के समय बोलते हुए ब्रिगेडि करंबा (सेना मंडल)।

डोम्बिवली सेवाकेन्द्र की ओर से लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र. कु. शकुन्तला शिव बाबा का परिचय देते हुए।

बंगलौर में बी. ई. एल. आफ़ीसरज कल्ब में रोजयोग पर वीडियो शो के पश्चात् ब्र. कू. हृदयपुष्पा भाषण करते हुए।

धारी बनकर योगी-जीवन की परम आनन्दित स्थिति में रहना होता है। तो प्रस्तुत चर्चा में हम कुछ सुन्दर विधियों का वर्णन करेंगे जिनके अभ्यास से पवित्रता में बल भरा जा सकता है।

काम-वेग को व कामनाओं को रोको

कहा गया है कि काम के वेग को रोकना हवा के वेग को रोकने के समान है। जो साधक काम के वेग को रोकने में सफल है, वही सच्चा योगी है। वह योगी जिसने भगवान से योग सीखा हो, अपने योग-बल से काम वेग को सदा के लिए समाप्त कर देता है। इसी के साथ-साथ सम्पूर्ण पावनता के पथिक को समस्त काम की सूक्ष्म कामनाओं का भी त्याग कर देना चाहिए। ये सूक्ष्म कामनाएँ काम का सूक्ष्म रस हैं जो कि संपूर्ण काम-जीत बनने में बाधक सिद्ध होती हैं। कई पुरुषार्थी इन सूक्ष्म कामनाओं को न पहचान पाने के कारण सदा ही माया से द्वन्द्व में उलझे रहते हैं, फलस्वरूप परम-शान्ति से दूर रहते हैं।

एक-दूसरे को भगवान का सुगन्धित पुष्प समझो

यदि आप पवित्र युगल हैं तो कितने गौरव की बात है कि आपने शास्त्रों की उस बात को निराधार सिद्ध कर दिया कि आग व कपास इकट्ठे नहीं रह सकते। अब आवश्यकता इस बात की है कि आप सम्पूर्ण पवित्रता को अपनायें। और इसके लिए पति-पत्नी के इस सम्बन्ध से अपनापन समाप्त कर दें कि ये मेरी पत्नी है। यह मेरापन ही आकर्षण का कारण है। इसके स्थान पर यह दृढ़ संकल्प करें कि यह शिव-बाबा का एक पवित्र सुगन्धित पुष्प है और भगवान ने इसे मुझे सम्भालने के लिए दिया है। तो यह मेरा परम कर्त्तव्य है कि इसकी सुगन्धी की रक्षा की जाए। ताकि यह सुगन्धी विश्व में माया की दुर्गन्ध को नष्ट करे। इस तरह का संकल्प व अपनेपन का त्याग पवित्रता में बल प्रदान करेगा।

अपने मनोबल व आत्म-विश्वास को ढोला न करो

जरा कल्पना करो जिन्होंने युवाकाल में या गृहस्थ में रहकर ब्रह्मचर्य को अपनाया हो, वे कितने शक्तिशाली होंगे। आज संसार का कोई भी शक्तिशाली कहलाने वाला व्यक्ति क्या यह साहस कर सकता है? तो अपने को कमजोर न समझो। कभी मन में या स्वप्नों में हार देखकर घबराओ नहीं, यह सब भी धीरे-धीरे ठीक हो जाएगा। साक्षी होकर यही समझो कि ये अपवित्र संकल्प सदा के लिए आपको छोड़कर बाहर जा रहे हैं। इस प्रकार साहस के साथ आगे बढ़ते रहो, सदा ही अपने मनोबल को बढ़ा-चढ़ा कर रक्खो। श्रेष्ठ मनोबल व दृढ़ता आपको एक दिन अवश्य ही सम्पूर्ण पवित्रता की चोटी पर अपना झण्डा लहराने में सक्षम कर देगा।

मर्यादित जीवन अपनाओ

मर्यादाएँ बन्धन नहीं हैं, परन्तु सहज भाव से इन्हें महत्त्वपूर्ण परहेज समझकर अपनाना चाहिए। मर्यादाओं की लाइन के बाहर आते ही माया अपना मीठा स्वरूप दिखाकर प्रभुत्व स्थापित कर लेती है। इसलिए जब लक्ष्य महान है तो उससे विपरीत जाने का इरादा क्यों। मर्यादाओं के उल्लंघन से ईश्वरीय सुख नहीं मिलता। अमर्यादित जीवन के दुख हम देख आये अब ईश्वरीय मर्यादाओं से अपना शृंगार करें।

अमृतवेले परमपिता से पवित्रता का तिलक लें

प्रतिदिन अमृत वेले परमपिता स्वयं हमारे मस्तक पर पवित्रता का तिलक लगाते हैं। तो प्रतिदिन यह अभ्यास करें कि मैं अव्यक्त वतन में सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप अलौकिक माता-पिता के समक्ष जाता हूँ, पहले उनकी दृष्टि से शक्तियाँ प्राप्त करता हूँ और फिर वे मुझे पवित्रता का तिलक देकर कहते हैं—"बच्चे पवित्र भव"। सारे दिन यह स्मृति जाग्रत रहे कि मेरे मस्तक पर सम्पूर्ण पवित्रता का तिलक लगा हुआ है इससे दृष्टि पावन रहेगी और मन शीतल—इसी प्रकार प्रतिदिन प्रातः एक बार ईश्वरीय ज्ञान को स्मरण कर मन को पूर्णतया आनन्दित कर दें तो मन सर्व

आकर्षणों से मुक्त हो जाएगा।

अपने स्वमान को प्रत्यक्ष करो

आप पवित्र आत्मा इस धरा पर सूर्य-समान हो और अपवित्र मनुष्य हैं जैसे कि टिम-टिमाते दीपक। अब सोचो किसका प्रभाव किस पर पड़ेगा। कलियुग के दूषित वातावरण से बचने के लिए अपने स्वमान में रहो—अपने को पहचानो तो यह नशा हमें सुरक्षा प्रदान करेगा। हमारा ईश्वरीय नशा हमारे लिए व दूसरों के लिए छत्र-छाया है। जैसे नशे-युक्त मनुष्य पर किसी अन्य का प्रभाव नहीं पड़ता वैसे ही हमारा स्वमान हमें बुराइयों के प्रभाव से मुक्त रखेगा। जब हम हीन भावनाओं में रहते हैं, तब ही अशुद्धता से प्रभावित होते हैं।

आत्मिक दृष्टि—सम्पूर्ण पवित्रता का आधार

ईश्वरीय महावाक्य है—"देखना व सोचना" ये ही आधार है, (Complete) सम्पूर्ण होने का या (Complaints) शिकायतें करने का। तो यदि हम दष्टि व वृत्ति को आत्मिक बना लें तो देह के आकर्षण से मुक्त होकर सम्पूर्णता की ओर बढ़ चल।

तो हमारे सामने प्रतिदिन अनेक लोग आते हैं, हम उनके मस्तक में चमकती हुई आत्मा देखने का अभ्यास करें। इससे अपना मन भी शान्त रहेगा दृष्टि भी पावन रहेगी और स्थिति योग-युक्त भी बनी रहेगी।

आत्मिक दृष्टि का अभ्यास पुरुषार्थ का सरलतम तरीका है। ऐसा करने से दूसरों को भी हमसे सुन्दर वाइब्रेशन्स आयेंगे और हमारी अनेक समस्याएँ हल हो जाएँगी।

तो आओ, गोल्डन जुबली के इस १९८६ वरदानी वर्ष में हम सब मिलकर सम्पूर्ण पवित्रता का तेज धारण करें, जिसे देखकर विश्व की भटकती आत्माएँ अपना सत्य ठौर पा सकें, वे धरा पर कार्यरत अव्यक्त परमपिता को पहचान कर उनसे वरदान ले सकें। और एक बार फिर कलि के इस अन्तिम काल में वसुन्धरा पर अनेक पवित्रता के सूर्य उदय होकर इसके अन्धकार को सदा के लिए समाप्त कर दें और महान भारत देश में पावनता की ऐसी गंगा बह चले जो यहाँ के प्रत्येक नर-नारी उसमें स्नान करके, पावन होकर, सच्चा सुख-शान्तिमय जीवन व्यतीत कर सकें।

○

स्वर्ण जयन्ती का महत्त्व

(शेष पृष्ठ २७ का)

आदि गुण ऐसे हैं। कहावत भी है कि जैसे सोने ही के वर्तन में शेरनी का दूध धारण किया जा सकता है, वैसे ही ब्रह्मचर्य की पूरी धारणा भी ज्ञान-निष्ठ बुद्धि में ही हो सकती है। अतः जिन आत्माओं की स्थिति ऐसी है कि वे ब्रह्मचर्य व्रत में पक्के हैं, वे स्वर्ण बुद्धि वाले ही हैं। परन्तु केवल ब्रह्मचर्य की बात नहीं, अन्य गुणों की भी बात है। जैसे मूल्यवान हीरों को सोने के ही जेवरों में जड़ा जाना है न कि चाँदी के, ऐसे ही जिनका जीवन ऐसा हो गया है कि वे ज्ञान के हीरों से सने हैं, वे स्वर्ण समान ही हैं।

पुनश्च, चिरकाल से मनुष्य ऐसे 'पारस' की खोज करता आया है जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाये। आध्यात्मिक चर्चा में पतित आत्मा को लोहे और पावन आत्मा को 'सोने' की उपमा देना स्वाभाविक ही है क्योंकि परमात्मा को पारसनाथ और ईश्वरीय ज्ञान को पारसमार्ग कहा गया है।

अतः प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय जो स्वर्ण-जयन्ती मना रहा है वह सार्थक ही है। विशेषकर इसलिए कि यह ईश्वरीय विश्व-विद्यालय स्वर्ण युग की पुनःस्थापना का कार्य कर रहा है।

○

स्वर्ण जयन्ती का महत्त्व

ब्रह्माकुमारी सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

किसी भी संस्था के इतिहास में स्वर्ण जयन्ती का होना एक महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त माना जाता है परन्तु प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के इतिहास में स्वर्ण जयन्ती की कुछेक अद्वितीय विशेषताएँ भी हैं।

यों रजत जयन्ती के बाद ५० वर्ष पूरे होने पर जो जयन्ती मनाई जाती है, उसका नाम स्वर्ण जयन्ती रखा जाना स्वाभाविक है क्योंकि स्वर्ण रजत से अधिक मूल्यवान होता है परन्तु एक आध्यात्मिक संस्था में स्वर्ण और रजत का महत्त्व केवल उनके आर्थिक मूल्य को लेकर नहीं बल्कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण ही से है। इसी प्रसंग में बाबा सोने की एक विशेषता तो यह बताते रहे हैं कि सोने में से यदि मुल्मा (Alloy) निकाल दिया जाये तो सोना अधिक नरम और ढालने योग्य (Mouldable or malleable) हो जाता है। इन्हीं विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए बाबा ने बताया है कि आत्मा में भी जन्म-जन्मान्तर के अशुद्ध संस्कारों का समिश्रण हो गया हुआ है। यदि इसे निकाल दिया जाए तो आत्मा उपमा में 'सच्चा सोना', 'खरा सोना' या 'शुद्ध सोना' बन सकती है। उसमें सहनशीलता, मेल-मिलाप, सहयोग-भावना आदि-आदि ऐसे गुण आ सकते हैं कि वह सहज और शीघ्र ज्ञान के साँचे में ढल सकती है अथवा परम-पिता परमात्मा उसे जिस डिज़ाइन अथवा शृंगार के रूप में बदलना चाहें, बदल सकते हैं। अत: स्वर्ण जयन्ती मनुष्यात्माओं की ऐसी अवस्था का प्रतीक है जिसमें कि वे ज्ञान और योग के अनुरूप ढल कर प्रभु का शृंगार रूप बन गई हों, उनमें से अनेक संस्कारों की अशुद्धि निकल गई हो। आज हम इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में अनेक वरिष्ठ बहन-भाइयों की, विशेषकर जिन्हें ५० वर्ष हो गये हैं, की ऐसी स्थिति देखते भी हैं। अत: आज ऐसी जयन्ती मनाया जाना आध्यात्मिक अर्थ में भी स्वाभाविक है।

दूसरी बात यह है कि लोहे को तो जल्दी जंग (Rust) भी लग जाता है, चाँदी भी जल्दी अपना श्वेत वर्ण खोकर कालिमा में परिवर्तित हो जाती है परन्तु सोना इतनी जल्दी अपनी चमक-दमक नहीं गंवाता। यह भी तो एक प्रकार से उसकी महानता अथवा उच्चता का प्रतीक है। अत: सोना आत्माओं की ऐसी स्थिति का प्रतीक है जिसमें कि वे इतनी महान हों कि माया उन्हें जल्दी प्रभावित न कर सके। जिन्हें ५० वर्ष इस आध्यात्मिक पुरुषार्थ को करते हुए हो चले हैं, उन्हें हम आज देखते हैं कि उनकी ऐसी महान स्थिति हैं। इस भाव से भी यह स्वर्ण जयन्ती सार्थक है।

तीसरी बात यह है कि किसी वस्तु का मूल्य उसके गुणों तथा उसके प्रयोग की विशेषता पर भी निर्भर करता है। चिकित्सा शास्त्री स्वर्ण के गुणों को स्वास्थ्य के लिए विशेष मानते हैं। अत: वे सोने-चाँदी के बर्तनों में खाने, सोने के वर्क प्रयोग करने यहाँ तक के सोने के जेवरों का प्रयोग करने को भी शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभकर बताते हैं—सोने का जो सौन्दर्य है सो अलग। आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए सोने का आकर्षण नहीं होता परन्तु सोने के अमुक गुणों का आध्यात्मिक महत्त्व आवश्यक है। कुछेक गुण ऐसे हैं जो आत्मा के स्वास्थ्य (स्व-स्थिति) में सहायक अर्थात् परम लाभदायक हैं। अत: स्वर्ण जयन्ती उन गुणों की धारणा के हो जाने का प्रतीक है। ब्रह्मचर्य, सन्तुष्टता

(शेष पृष्ठ २६ पर)

प्रकृति आपकी दासी

ब्र० कु० उर्मिला कुरुक्षेत्र

सर्व आत्माओं के पिता निराकार परमात्मा शिव जहाँ हम बच्चों को देह से न्यारा होने, स्व-स्वरूप का चिन्तन करने, दूसरों को आत्मिक दृष्टि से देखने की शिक्षा देते हैं वहाँ यह भी कहते हैं कि अपने में सतयुगी संस्कार इमर्ज करें। तीसरे नेत्र से न केवल परमधाम की शान्ति की ही अनुभूति करें वरन् सतयुगी दैवी पावन सृष्टि में भी रमण करें। क्योंकि आपके संकल्पों के इमर्ज होने पर ही धरती पर देवताई दुनिया इमर्ज होगी। इसलिए उनके मीठे-मीठे महावाक्य हैं—"मीठे बच्चे! शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो।" आइये विश्वपिता के इसी महावाक्य "आपके संकल्पों से प्रकृति सतोप्रधान हो जाएगी और धरती पर पूर्ण पावन दुनिया अवतरित हो जाएगी" के परिप्रेक्ष्य में हम मानव और प्रकृति के सम्बन्धों का विश्लेषण करें।

जैसा कि हम सभी जानते हैं आत्मा, परमात्मा और प्रकृति तीनों चीजें अविनाशी हैं। इन तीनों में आत्मा और प्रकृति का साथ लम्बा और अधिक समय का है क्योंकि आत्मा प्रकृति के साथ अर्थात प्रकृति के बने शरीर को धारण कर प्रकृति की इस दुनिया में पार्ट बजाती है। आत्मा चेतन है और प्रकृति जड़ है। प्रकृति जड़ इस भाव से नहीं है कि वह बढ़ती या फैलती-फूलती नहीं है वरन् वह मानव की तरह न बोल सकती है और न भावनाओं को व्यक्त कर सकती है। इसलिए मानव जिसमें बुद्धि है को छोड़कर पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों को हम प्रकृति में ही शामिल करते हैं।

मानव आत्मा कर्ता है अर्थात साध्य है और शरीर तथा प्रकृति उसके साधन हैं। अतः जैसा साध्य या कर्ता होता है वैसे ही गुण, धर्म, रंग, रूप साधन में भी आ जाते हैं। यही कारण है कि सृष्टि की शुरुआत में जब मानव आत्मा पूर्ण सतोप्रधान होती है तो प्रकृति भी पूर्ण सतोप्रधान और सुखदायी होती है। उसमें मानव और मानव के गुणों के प्रति सम्मान की भावना होती है। वह हर प्रकार से उसकी सेवा करती है। दूसरी तरफ उस समय क्योंकि मानव में आपसी सौहार्द होता है अतः प्रकृति जहाँ मानव के प्रति वफादार है वहाँ परस्पर भी प्रेम से रहती है। वहाँ जंगल में भी जंगली सभ्यता नहीं है क्योंकि वहाँ है ही फूलों का बगीचा जिसका सूचक है कि गाय शेर एक घाट पर पानी पीते थे।

कालान्तर में मानव की सतोप्रधान अवस्था रजो तमो अवस्थाओं में से गुजरती हुई कलियुग के अन्त में जब एकदम तमोप्रधान अवस्था में पहुँच जाती है तो प्रकृति भी उग्र रूप धारण कर लेती है। सभी सम्बन्धों में दरारें आ जाती हैं लेकिन आरम्भकर्त्ता मानव ही है। मानव खाने-पीने के बारे में मलेच्छ बन जाता है माँस, शराब या अन्य किसी भी तामसिक पदार्थ का परहेज नहीं करता अतः गाय जैसी श्रेष्ठ पशु भी विष्ठा खाने लगती है। मानव न्याय, अहिंसा, प्रेम, दया, धर्म को छोड़ कर थोड़ा-सा पद, पैसा, शक्ति आने पर छोटों को दबाने लगता है उसी तरह प्रकृति में भी ये भावनाएं आ जाती हैं। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है और शक्तिशाली शेर निर्बल जीवों का हनन करता है।

जब प्रकृति मनुष्य के इतना पीछे चलती है तो अवश्य ही मानव में उसको अपनी इच्छाओं के अनुसार ढालने की शक्ति भी है। प्रसिद्ध दार्शनिक और चिन्तक बरनार्ड शा ने मानव की इस शक्ति को जीवन शक्ति Life force के रूप में प्रकट किया है। (Life force) के इस सिद्धान्त के अनुसार जीवन शक्ति एक ऐसी फोर्स (Force) है जो निश्चित दिशा लिए हुए है। और यह (Moher) (प्रकृति) को अपनी इच्छानुसार मोड़ने की शक्ति रखती है। शा के अनुसार किसी भी काम को करने की गहरी इच्छा से वह काम हो जाता है। जैसे एक खिलाड़ी गहरी इच्छा से माँसपेशियों को मजबूत बना लेता है और मन्द बुद्धि मानव गहरी इच्छा शक्ति से दिमाग को समुन्नत कर सकता

(शेष पृष्ठ १३ पर)

पावनता की गंगा बहायें

ब्र० कु० सूरज कुमार, मधबन, माउण्ट आबू

"हम सारे विश्व में पावनता की गंगा बहायेंगे"—ये गौरव पूर्ण शब्द थे उस एक सुशिक्षित पवित्र कन्या के, जिसने संसार में माया के सूर्य को अस्त करने का मनोबल धारण किया था। ये शब्द सुनकर मन गदगद् हो उठा कि किसने इन, कलियुग के तमोप्रधान वातावरण में पली कन्याओं को इतना आत्म-विश्वास प्रदान किया! किसने इनके मन में पावनता के बीज अंकुरित किये! और किसने इन्हें माया को चुनौती देने का साहस दिया···हमें अच्छी तरह ज्ञात है कि पवित्रता के सागर की दृष्टि जिन पर पड़ चुकी, जिन्होंने अपने मन का मीत सर्व शक्तिवान को बना लिया, जिन्होंने द्वार पर आये भाग्य को पहचान कर उसे स्वीकार किया, उन्हें ही ये बल प्राप्त हुआ।

फिर उस योगिनी ने कहा—"जबकि संसार में चारों ओर विकारों की बाढ़-सी आ गई है, जिसमें सभी नर, नारी, साधु-सन्यासी बह चले हैं। जबकि अनेक दुःशासन अबलाओं के चीर हरण कर रहे हैं···जबकि कंस प्रवृत्ति चहुँ ओर अपना आधिपत्य जमा रही है···दानवता अपना नग्न नृत्य कर रही है, हम पवित्र कन्याएँ विश्व में पवित्रता की सरिता बहाकर इस बाढ़ को शान्त करेंगी।"

उसने अपनी मन धारा को प्रवाहित करते हुए बोला—"जबकि विश्व में चारों ओर हिंसा ने अहिंसा को ललकारा है। अहिंसा परमोधर्म का नारा लगाने वाले धर्मों ने हिंसा परम-धर्म का हथियार सम्भाला है···जबकि अनेक निर्दोष लोगों के रक्त से धरती का आँचल सना हुआ है··· और प्रत्येक मानव अपने को असुरक्षित अनुभव कर रहा है—ऐसे दुष्काल में हम स्नेह की सरिता बहाकर सबको मानवता सिखलायेंगी। कितने प्रेरणादायक और महान इरादे हैं उनके और ऐसे ही वत्सों के साथ भगवान का बल होता है। और यह भी सम्पूर्ण सत्य है कि वे सतत पवित्रता की चेतन प्रति मूर्ति बन कर समस्त आसुरी सम्पदा को अपने चरणों में झुकने को बाध्य कर देंगी।

कलियुग के इस डरावने अन्धकार में, जहाँ मनुष्य को कहीं भी प्रकाश की किरण दिखाई नहीं देती चारों ओर अनेक दीपक जले हैं, जिनका प्रकाश शीघ्र ही इस भयावह अन्धकार को दूर करेगा। ये दीपक हैं, वे ब्रह्मा वत्स, जिन्होंने मन में पवित्रता की ज्योति जगाई है और वे वत्स इस दीपक में ज्ञान-योग का घृत डालकर शीघ्र ही इसकी लौ को इतना ऊंचा कर देंगे कि समस्त विश्व उसे देख सके और उससे प्रकाशित हो सके।

कैसे इन छोटी-छोटी कन्याओं ने, गृहस्थ जाल में फंसी माताओं ने और अनेक युवा पुरुषों ने इस कठिन तप को अपना लिया। लोगों को विश्वास नहीं होता। इसी तप के लिए जंगलों में खाक छानते जटाधारी साधू इसे कल्पना कहकर स्वयं को भटकन में ही पड़े रहने देना चाहते हैं। कोई तो इसे असम्भव कहकर आगे बढ़ने का साहस ही नहीं करते। कोई पवित्रता को प्रकृति के प्रतिकूल मानकर इसे अस्वाभाविक प्रवृत्ति या प्रकृति से युद्ध या प्रकृति के नियमों के विरुद्ध कहकर इसकी महानता को ही स्वीकार नहीं करते। उन्हें पता ही नहीं कि अपवित्रता और पवित्रता का सम्बन्ध प्रकृति से नहीं आत्मा से है। काम की कामना या पवित्रता की भावना आत्मा को होती है न कि प्रकृति को और पवित्रता ही आत्मा का मूल एवं

सत्य स्वभाव है। फिर कौन है इन ब्रह्मा वत्सों के पीछे और क्यों इन्होंने संसार की विषय वैतरणी नदी में बहना स्वीकार नहीं किया—इससे श्रेष्ठ क्या मिला इन्हें जो इन्होंने इस तामस और अन्ते दुखदाई सुख का परित्याग कर दिया। इन्हें मिला सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय सुख और अतीन्द्रिय सुख···इन्हें मिला प्रभु-मिलन का अनुपम रस···इन्हें मिला स्व: पर राज्य करने का सम्पूर्ण अधिकार···और भविष्य में इन्हें मिलना है अटल देव पद···।

पवित्रता समय का वरदान है

अन्धकार सदा ही तो नहीं रहता और भला ज्ञान सूर्य की सृष्टि पर अन्धकार का साम्राज्य हो भी कैसे सकता है···उसका अन्त होगा, और शीघ्र ही होगा। ये वही तो समय है जबकि अन्धकार की सघनता समाप्ति की ओर है। इस प्रभात के पावन संगम काल में जो आत्माएँ पावनता की गंगा में स्नान करना चाहती हैं, उनके लिए मार्ग खुला है। क्योंकि स्वयं भगवान ने इस समय को वरदान दिया है। जो भी आत्मा पावन होना चाहे, प्रभु की शरण आये और वरदान प्राप्त करे परन्तु कैसी विडम्बना है कि जो लोग हजारों वर्षों से पुकारते रहे कि हे पतित-पावन आओ, हमें पावन बनाओ, उनकी पुकार सुनकर जब पतित-पावन प्रभु उन्हें पावन बनाने के लिए पुकार रहे हैं, तो वे प्रभु की पुकार भी नहीं सुनते।

ये वही शास्त्र-चर्चित देवियाँ हैं

हम भारतवासी पावन थे, सम्पूर्ण भारत ही पावन था। जिन देवी-देवताओं के मन्दिरों से ही पवित्रता की झलक मिलती है, जिनके दर्शनार्थ आज भी पवित्रता को अपनाना पड़ता है···जिनके पुजारी—संन्यासी भी पवित्रता को अपनाना चाहते हैं, भला सोचो कि वे स्वयं कितने पावन होंगे।

तो वही देवियाँ पुनर्जन्म लेते-लेते पुनः यहाँ पहुँची हैं और वे पुनः वही देव पद पाने के लिए योग-तपस्या कर रही हैं। इसीलिए सहज भाव से ही उन्होंने पवित्रता को अपना लिया। क्योंकि वे तो थीं ही पवित्रता की देवियाँ। उन्हें यह एहसास हो गया कि हम ही वे थे···और इस अनुभव के बाद पवित्रता को अपनाना कठिन नहीं रह जाता।

हमारे मन कैसे हों ?

अब हम ब्रह्मा-वत्सों को पुनः इस धरा पर पवित्रता का सूर्य चमकाना है। पवित्रता के बल के बिना सभी धर्म निर्बल हो चुके हैं, संसार मानो शक्तिहीन हो चुका है और प्रकृति के अधीन होता जा रहा है। ऐसी विकट परिस्थिति में, जबकि चारों ओर काम के ज्वालामुखी फट रहे हैं, प्रत्येक मन में तनाव व अशान्ति की अग्नि जल रही है, काम-पीड़ा से दुखी मनुष्य शीतल छाया की खोज में भटक रहा है, हम जिम्मेदार आत्माओं के मन कितने निर्मल, कितने शीतल व कितने शक्तिशाली हों। हमारा प्रत्येक संकल्प सृष्टि के लिए पावनता का वरदान हो, हमारा प्रत्येक संकल्प निर्बलों का सहारा हो···हमारा प्रत्येक संकल्प काम-अग्नि पर शीतल जल के छींटे छिड़कने समान हो···हमारा प्रत्येक संकल्प अनेक आत्माओं पर उपकार करने वाला हो। हमारा मन संसार में पवित्रता के प्रकम्पन भी तभी फैलायेगा, जबकि मन पवित्रता के सागर से जुड़ा होगा। इस प्रकार ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा, व अहं से रहित मन वाले ही धरा पर पावनता की गंगा बहायेंगे।

युवा काल में सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य—
एक महान आश्चर्य

सत्य है, परन्तु आश्चर्य भी कि हममें से कई ब्रह्मा-वत्सों ने अपने युवा काल में ही सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य की स्थिति प्राप्त कर ली है। यह कैसे हुई ? ईश्वरीय वरदान से या स्वयं के योग-अभ्यास से ? दोनों से ही। यह स्थिति संसार के विचारकों, सन्तों और मनोवैज्ञानिकों के लिए सुन्दर चुनौती है। हो भी क्यों न···हमने ही तो यह चुनौती भरा पथ स्वीकार किया था। इस स्थिति तक पहुँचने के लिए पुरुषार्थी को श्रेष्ठ संकल्पों की पालना से व्यर्थ के वेग को समाप्त करना होता है, दृढ़ संकल्प

सम्पूर्ण पवित्रता, सुख एवं शान्ति का स्वर्णिम युग– एक वास्तविकता या स्वप्न ?

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य एक लम्बे समय तक विश्व को सुख, शान्ति एवं स्वास्थ्य सम्पन्न स्थान बनाना है। दूसरे शब्दों में इसकी सर्वशक्तियों का प्रयोग सत-युग अथवा स्वर्णिम युग की पुर्नस्थापना के लिये हो रहा है जिसमें देवी देवतायें अथवा श्रेष्ठ चरित्रवान मनुष्य होंगे। परन्तु कुछ दार्शनिकों को यह शक है कि क्या वास्तव में किसी समय पर ऐसे समाज या ऐसी मानवता का होना सम्भव है। इतिहास की कुछ पुस्तकों या पुराने शास्त्रों का हवाला देते हुये वे कहते हैं कि लिखित इतिहास के किसी भी काल में ऐसा कोई समय नहीं था जिसमें युद्ध, रोग, निर्धनता या आसुरी संस्कारों वाले लोग नहीं थे। वे यह भी कहते हैं कि अनेक सुधारकों, एवं सन्तों के प्रयत्नों के फलस्वरूप भी मनुष्य की वृत्ति में कोई सुधार नहीं हुआ बल्कि मनुष्य का पतन ही हुआ है, उसकी वृत्ति अधिक बुराई की ओर ही अग्रसर हुई है।

जबकि इनमें से अनेक लोग सर्व के लिये शान्ति, सुख तथा स्वास्थ्य की शुभ कामना रखते हैं और कुछ एक तो इन प्रयत्नों में लगे हुये भी हैं, फिर भी उनका ऐसा विचार है कि ऐसे उच्चकोटि के समाज की स्थापना का केवल एक स्वप्नमात्र ही है। उनका विश्वास है कि यह एक ऐसा आदर्श है जिसे पूरा नहीं किया जा सकता; यह सामाजिक पराकाष्ठा की वह स्थिति है, जो कि मनुष्य की योग्यताओं की सीमा के बाहर है, वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर सबको शान्ति प्रदान करे और वे विश्व शान्ति की बात भी करते हैं परन्तु उनके मन की आन्तरिक आवाज यह है कि "यह अभी नहीं हो सकता।"

अब ब्रह्माकुमारियों का इस विषय में क्या मन्तव्य है उन्हें ऐसा विश्वास या यह आशा क्यं है कि विश्व में सम्पूर्ण शान्ति तथा सुख को प्राप्त किया जा सकता है या कि सतयुग, इतिहास का एक वास्तविक तथ्य है जिसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है। फिर उनके विचार में ऐसा कौन-सा समर्थ साधन या तरीका है जो कि मनुष्य की विश्व-शान्ति की इच्छा को केवल आशा में ही नहीं, बल्कि एक वास्तविकता में बदल सकता है ? अनेक संस्थाओं आदि ने इस समस्या को हल करने में जो अभी तक अनेक प्रयत्न किये हैं, उनकी भेंट में ब्रह्माकुमारियों का रास्ता भिन्न कैसे है ?

ब्रह्माकुमारियों का उत्तर

ब्रह्माकुमारियों का विश्वास है कि दुःख, अशान्ति, रोग इत्यादि का एक विशेष कारण होता है और यह कारण मनुष्य के मन में वास करता है। और यदि इस कारण का निवारण हो जाये तो विश्व में सुख, शान्ति एवं निरोगता की स्थिति आ जानी चाहिये। उनका यह भी मन्तव्य है कि मन की अशान्ति, मनुष्य और समाज का वास्तविक स्वभाव नहीं है; मनुष्य का मूल गुण तो शान्ति है और इसलिये हर व्यक्ति यह शान्ति की मूलस्थिति को प्राप्त कर सकता है, यदि वह इस मंजिल को प्राप्त करने में कुछ ज्ञान प्राप्त कर ले और किसी की मार्गदर्शना और सहायता प्राप्त करे। उनका यह भी विश्वास है कि हर व्यक्ति सच्चे दिल से चाहे परोक्ष या अपरोक्ष रूप में शान्ति चाहता है। अतः उसे शान्ति स्थापना के कार्य में सहयोग देना चाहिये और यह तभी सम्भव है जब वह इस बात को समझ ले कि उनके लिये जो साधन अपनाया जा रहा है वह उचित है।

ब्रह्माकुमारियों का अतीत के विषय में यह दृढ़ विश्वास है कि निश्चित रूप से एक ऐसा समय था जबकि समस्त विश्व में सम्पूर्ण शान्ति, सुख एवं एकता विद्यमान थी। उनका यह मन्तव्य है कि वह

समय विश्व का सतयुग एवं त्रेतायुग का समय था जिसकी अवधि २५०० वर्ष है, और हर एक युग १२५० वर्ष का है। इसके लिये वे उन प्रमाणों की ओर संकेत करती हैं जो कि हमारे प्राचीन भारतीय शास्त्रों, पौराणिक कथाओं तथा ग्रीक साहित्य में विद्यमान हैं। वे कहती हैं कि प्राचीन संस्कृत साहित्य में इस समय को सतयुग अथवा कृतयुग तथा त्रेतायुग कहा जाता है; ग्रीक दार्शनिकों के विचार में यह समय मनुष्य की स्वर्णिम एवं चाँदी तुल्य स्थिति का प्रतीक था और ओल्ड टैस्टामैन्ट (Old Testament) के अनुसार जो कि ईसाइयों, मुस्लिम तथा यहुदियों की धर्म-पुस्तक है, विश्व आदिकाल में स्वर्ग था। उनके अनुसार इस काल में (सतयुग और त्रेतायुग में) कोई युद्ध, रोग नहीं थे और न ही गरीबी तथा कोई दुख था।

जब दार्शनिक उन भारतीय पौराणिक कथाओं के बारे में यह कहते हैं कि सृष्टि के आदि के दो युगों में देवताओं तथा दैत्यों में युद्ध हुये तो ब्रह्माकुमारियाँ इस विषय में यह कहती हैं कि इतिहास और पौराणिक कथाओं का परस्पर मिश्रण कर दिया गया है और कालक्रम में कुछ ग़लतियाँ हुई हैं तथा कुछ लाक्षणिक कथाओं एवं वृत्तान्तों को ठीक ढंग से समझा नहीं गया है। इन वृत्तान्तों का उनका अपना स्पष्टीकरण है और वे कारण भी बताती हैं कि कैसे उनका मन्तव्य ठीक है। यदि कोई खुले दिल से उनके तर्क-वितर्क को सुने तो वह इस निर्णय पर पहुंचेगा कि इनमें कुछ ज्ञान शक्ति और विचार शक्ति है और व्यक्ति भी इनके इन विचारयुक्त तथा युक्ति-युक्त तथ्यों को सुनकर स्वयं में कुछ शक्ति महसूस करता है।

ब्रह्माकुमारियां डार्विन के विकासवाद के सिद्धान्त को तथा सृष्टि की बहुत लम्बी आयु के सिद्धान्त को अस्वीकार करती हैं। उनके अनुसार एनट्रापी ला (Entropy law) और थर्मोडायनामिक्स का दूसरा सिद्धान्त (Second law of Thermodynamics) डार्विन की अनेक युक्तियों के स्पष्टीकरण के विरुद्ध जाता है। उनका विश्वास है कि मानव के चरित्र तथा सभ्यता में विकास या सुधार की बजाय धीरे-धीरे पतन हुआ है। इसके अतिरिक्त डार्विन का यह सिद्धान्त कि मनुष्य जीवन का विकास जड़वस्तु के छोटे सैल के जन्तु से हुआ, ब्रह्माकुमारियों के विचार से यह ग़लत है क्यूंकि पैस्टयोर (Pasteure) ने यह सिद्ध कर दिया है कि जीवन चैतन्य जन्तु से होता है न कि जड़ वस्तु से। और न ही सृष्टि के युगों की आयु लाखों वर्ष है जैसा कि कई भूविशेषज्ञ कहते हैं क्यूंकि सृष्टि में बड़ी-बड़ी उथल पुथल के फलस्वरूप परिवर्तन होते आये हैं। ज्वालामुखी पर्वतों का फटना, विश्वमण्डल के बाहर की वस्तुओं के परिवर्तन का प्रभाव, विश्वव्यापी जलवायु में परिवर्तन जैसे कि सूर्य के प्रकाश में बाधा जिससे तापमान में बहुत अधिक गिरावट, विश्व-व्यापी बाढ़ें, या बर्फ, के युग, ये सब कुछ ऐसे तथ्य हैं, जिनके ऊपर जब विचार किया जाता है तो यह सिद्ध होता है कि सृष्टि के युगों की बहुत लम्बी-लम्बी आयु की बात ग़लत है और अस्वीकार्य है।

ब्रह्माकुमारियाँ इस तथ्य को भी दृढ़तापूर्वक अस्वीकार करती हैं कि सृष्टि में आदिकाल से ही दुःख और अशान्ति रही है और कि राम के समय पर आसुरी लक्ष्णों वाला रावण था या सतयुग में हृणाकश्यप था। उनके विचार में ऐसा सोचना ईश्वर के नाम पर एक धब्बा लगाना है। दृढ़तापूर्वक अपने तर्क को पेश करती हुई वे कहती हैं "सब ईश्वरवादी लोगों का यह विश्वास है कि परमात्मा ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर, आनन्द का सागर, प्रेम का सागर, दयालु, कृपालु एवं पवित्र है। तब भला यह कैसे सम्भव हो सकता है कि परम पवित्र, दयालु, कृपालु परमात्मा ने ऐसी सृष्टि की रचना की होगी जिसमें उसकी सर्वोत्तम रचना, नर और नारियों को आरम्भ में ही दुःख और अशान्ति होगी।"

तब इस विषय पर कोई एतिहासिक प्रमाण क्यों नहीं मिलता ? इस प्रश्न के उत्तर में उनका यह कहना है कि इतिहास का लिपिबद्ध होना बहुत

काल के बाद आरम्भ हुआ। इसके अतिरिक्त, क्योंकि सतयुग में कोई लड़ाई-झगड़े, दुःख, अशान्ति, या कोई आपत्तियाँ नहीं थीं, इसलिये ऐसी कोई घटनायें नहीं थीं जो इतिहास के पन्नों में लिखने योग्य हों क्योंकि कहावत है, "बुरी खबर ही अच्छी खबर है" और "अच्छी खबर कोई खबर नहीं है।" फिर भी एतिहासिक प्रमाण की अनुपस्थिति के कारण जो त्रुटि रही, वह सतयुग की प्रशंसा में मौखिक रूप से जैसे अनेक पौराणिक कथायें या कहानियां मिलती हैं, वह इनसे पूरी हो जाती हैं।

दुःख और अशान्ति का कारण

अब यदि किसी जमाने में सतयुग था, तो प्रश्न उठता है कि वर्तमान समय में अनेक दुःख और अशान्ति का क्या कारण हैं और इनका निवारण कैसे हो सकता है ?

ब्रह्माकुमारियों का मन्तव्य है कि प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर तथा परमात्मा द्वारा ज्ञान के अनेक रहस्योदघाटन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्व समस्याएँ चाहे वे व्यक्तिगत हों या विश्वव्यापी हों, के मुख्य आठ कारण हैं।

१. **कामवासना के** फलस्वरूप आज अवैध सम्बन्ध, अपहरण, बलात्कार, अवैध बच्चों का जन्म, कैबरे नृत्यों द्वारा मनोरंजन, नग्नता, या स्त्रियों के प्रति गलत धारणायें, तलाक, कला-साहित्य तथा सिनेमा में अश्लीलता, देखने को मिलती है। इसी विकार के कारण राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या में वृद्धि की समस्या आज विकराल रूप लिये हुये है जिसके फलस्वरूप रहन-सहन का गिरा हुआ स्तर शहरों में भीड़-भाड़ बेरोजगारी, बढ़ रही है और यही कारण है कि अपराध दिनों-दिन बढ़ते जा रहे हैं तथा आर्थिक समस्यायें भी वृद्धि पर हैं।

२. क्रोध, अनेक लड़ाई-झगड़े, अशान्ति, मार-पीट, परस्पर मनमुटाव, सम्बन्ध-विच्छेद, ज़ुलम, निष्ठुरता, क्रूरता, निर्दयता, विवेक-हीनता इत्यादि को जन्म देता है। इसके द्वारा ही साम्प्रदायिक झगड़े, राजनीतिक तनाव, गृहयुद्ध, अन्तर्राष्ट्रीय लड़ाइयां होती हैं। क्रोध के कारण से ही धन-सम्पत्ति का बहुत अधिक नुकसान होता है और बहुत अधिक मात्रा में अपराध, मुकदमे बाज़ी, तथा तनावपूर्ण वातावरण क्रोध का परिणाम है।

३. **लोभ** के फलस्वरूप बेईमानी, गबन, धन का दुरुपयोग, रिश्वत, मिलावट, धन-दौलत को गोपनीय रखना, कर (टैक्स) की चोरी, शोषण, गरीबी, इत्यादि जन्म लेती हैं। इन्हीं के द्वारा आर्थिक संकट, श्रेणी-युद्ध (class war) और यहां तक कि अणु-बमों की होड़ उत्पन्न होती है।

४. **मोह या लगाव** के कारण पक्षपात, अनुराग, भाई-भतीजावाद, चापलूसी, अन्याय, जातिवाद आदि का जन्म होता है।

५. **अहंकार या अभिमान** घमण्ड, मगरूरी, दुर्व्यवहार, अनादर, दूसरे को नीचा दिखाना, और बात-बात पर झिड़कना, ईर्ष्या, विरोध, दिल-जली बातें करना, मुकदमेबाज़ी, जातीवाद, रंगभेद, और युद्ध तक को जन्म देता है।

६. **आलस्य या सुस्ती** आर्थिक पिछड़ापन, उन्नति में कमी, निर्धनता, दूसरों पर निर्भर रहना, गुलामी इत्यादि की जन्मदाता है। इससे मनुष्य में हिम्मत, उल्लास, आगे बढ़ने के प्रयत्नों में बाधा आती है।

७. **शरीर और मन के लिए गलत प्रकार का भोजन**— ऐसा भोजन जो शरीर में उत्तेजना, और आलस्य पैदा करता है, या जिससे मनुष्य का मन गिरावट की ओर अग्रसर होता है, या जो मनुष्य के संयम और निर्णय-शक्ति को कम करता है, वह भोजन यथार्थ नहीं है। वह भोजन जिससे शरीर की ग्रन्थियों से कुछ असाधारण रस निकलते हैं या जिससे कामवासनायें उत्पन्न होती हैं, वह भी अयथार्थ भोजन है।

इसी प्रकार ऐसा साहित्य या सिनेमा जिनमें अपराध तथा भोग-विलास सम्बन्धित बातों की भरमार रहती है, और जिनको पढ़ने या देखने

वालों के मन में ऐसी भावनायें पैदा होती हैं, ऐसी बातें मन के लिये अयथार्थ प्रकार का भोजन है।

इसी प्रकार जिन स्त्री-पुरुषों में आसुरी वृत्तियां जैसे कि अपराध, चोरी, भोग-विलास, मद्यपान, धूम्रपान इत्यादि होती हैं, उनका संग-कुसंग माना जाता है जो मनुष्य की मानसिक और शारीरिक शक्ति को बुरी तरह प्रभावित करता है। उनका संग मन को गलत भोजन प्रदान करता है। उनके विचार दूसरों की विचार शक्ति में ज़हर का काम करते हैं और उनके श्रेष्ठ चरित्र तथा अच्छी निर्णय-शक्ति को लूट लेते हैं।

८. **दूसरों के अवगुणों को देखना**—इससे घृणा, दुर्व्यवहार, बर्बरतापूर्ण व्यवहार, चुगली इत्यादि जैसी बातें उत्पन्न होती हैं। सदा दूसरों के दोषों को देखते रहने से भी स्वयं का मन दूषित हो जाता है। इससे सम्बन्ध बिगड़ते हैं और एक-दूसरे के लिये नफ़रत की भावना पैदा हो जाती है।

इन सब कारणों का मूल बीज देह-अभिमान है

अब उपरोक्त सर्व रोगों और व्याधियों को जिनसे मन या आत्मा को हानि होती है, दो भागों में व्यक्त किया जा सकता है—मोह या राग और घृणा या द्वेष। ये दोनों आत्मा के पक्के शत्रु हैं। सर्व प्रकार के दुःखों, अशान्ति और लड़ाई-झगड़ों के ये ही दो मुख्य कारण हैं। ये मनुष्य की स्व-मानसिक स्थिति में तनाव पैदा करते हैं। मन और शरीर का ऐसा घनिष्ट सम्बन्ध है कि ऐसे दूषित या नकारात्मक विचार मनुष्य की ग्रन्थियों, नाड़ियों तथा महत्वपूर्ण अंगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। ये नकारात्मक विचार सारे शरीर को प्रभावित करते हैं और इनसे हाईपोथैलमस (Hypothal mus), पिटचुटरी ग्रन्थि, हृदय, फेफड़े, खून आदि-आदि में बिगाड़ आता है। इनसे अनेक मानसिक सम्बन्धी शारीरिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं जैसे कि ब्लडप्रैशर, कैन्सर या पैपटिक अलसर (pepticulsre) आदि-आदि। यह देखा गया है कि ९८ प्रतिशत रोग तनाव और नकारात्मक विचारों द्वारा पैदा होते हैं। बहुत-से अपराध भी मानसिक तनाव की स्थिति में किये जाते हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि सर्व मानसिक और शारीरिक रोगों का कारण वे बातें हैं जिन्हें ऊपर वर्णन किया जा चुका है। परन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि इन सब कारणों का बीज देह-अभिमान है।

निदान

स्पष्टतः इन सबका इलाज रोगों के कारणों को निवारण करने में है। इसमें यह आवश्यक है कि हमें नकारात्मक विचारों और कृतियों को निकालना होगा। और जैसा कि पहिले स्पष्टीकरण किया जा चुका है, ऐसे नकारात्मक विचारों को देह-अभिमान को छोड़ आत्मा की स्थिति में स्थित होने से ही निकाला जा सकता है।

चार प्रकार का पुरुषार्थ

इसके लिये, चार प्रकार के आत्मिक, आध्यात्मिक, मानसिक पुरुषार्थ की आवश्यकता है।

१. **आध्यात्मिक ज्ञान**—सर्वप्रथम मनुष्य को स्वयं के बारे में यथार्थ ज्ञान और उसका अन्य व परमात्मा के साथ क्या सम्बन्ध है, इसका ज्ञान होना चाहिये। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि स्वयं को 'आत्मा' न समझ, शरीर अर्थात अयथार्थ सत्ता समझने से ही सर्व बुराइयों का जन्म हुआ है, चाहे परोक्ष रूप में वे विचारों के रूप में हों या अपरोक्ष रूप में संस्कारों के रूप में हों।

आध्यात्मिक ज्ञान एक विशाल विषय है क्यूंकि यह आत्मा के ज्ञान से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों को स्पष्ट करता है। यह इन गुह्य बातों पर प्रकाश डालता है जैसे कि आत्मा का रूप एवं गुण क्या है? मन, बुद्धि, संस्कारों तथा स्मृति का आत्मा के साथ क्या सम्बन्ध है? कब और कैसे आत्मा अपने निजि स्वरूप की विस्मृति में आई? पृथ्वी पर आत्मा कहां से आई? क्या आत्मा अविनाशी और अनादि है? क्या पुनर्जन्म एक प्रमाणित तथ्य है या केवल एक धार्मिक सिद्धान्त या केवल एक कल्पना है? जब आत्मायें सम्पूर्णता या मुक्ति को प्राप्त कर लेती हैं तो उनकी क्या अवस्था होती है?

ऐसे अनेक प्रकार के प्रश्नों का उत्तर आध्यात्मिक ज्ञान में मिलता है। ये कोई इतने कठिन या खुश्क विषय नहीं हैं। ये तो वास्तव में मन में उत्साह तथा ताज़गी लाते हैं।

२. **राजयोग** (मैडिटेशन)—आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित यह मुख्य रूप से एक अभ्यास का विषय है। इसमें मनुष्य अपने मन को आत्मा की स्मृति में स्थित करने तथा परमात्मा के साथ स्नेह-पूर्ण सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न करता है। आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित यह एक प्रकार का जिन्दगी को जीने का ढंग है। यह बहुमूल्य नैतिक, आत्मिक व आध्यात्मिक नियमों को धारणा में लाने का अभ्यास है जिसे हम अपनी दिनचर्या में पालन करते हैं।

राजयोग के अभ्यास से (१) मनुष्य स्वयं को आत्मा की स्थिति में स्थित करता है (२) भावात्मक स्थिरता आती है। (३) विचारों में स्पष्टता तथा विश्वास पैदा होता है (४) पिछले आसुरी संस्कारों व स्मृतियों को दूर करने में सहायता मिलती है। (५) हिम्मत व उल्लास आता है (६) शान्ति और आनन्द की प्राप्ति होती है जो कि मन की तनावपूर्ण व अशान्त वृत्तियों को ठीक करते हैं।

३. **दिव्य गुणों की धारणा**—यह स्पष्ट किया जा सकता है कि सभी दुःखों का मूल कारण कोई न कोई एक या अन्य दिव्य गुणों की कमी होता है। जब मनुष्य धैर्य, सहनशीलता, नम्रता, मधुरता आदि गुणों को खो बैठता है तो वह अपने लिये अनेक दुख के पहाड़ खड़ा कर लेता है।

वास्तव में जो आठ विकार या बुराइयां ऊपर स्पष्ट की जा चुकी हैं, वे भी नैतिक मूल्यों, दिव्य गुणों के अभाव के कारण ही उत्पन्न होती हैं। ब्रह्मचर्य का पालन न करना, काम-वासना है। सहनशीलता व मधुरता के न होने से क्रोध जन्म लेता है। नम्रता के न होने से अहंकार पैदा होता है। सन्तोष के न होने से लोभ उत्पन्न होता है इत्यादि-इत्यादि। इसलिये हमें गुणवान, निर्विकारी, निरोगी रहने के लिये इन दिव्य गुणों को धारण करना चाहिये।

४. **रूहानी समाजिक सेवा**—समाज की सेवा करने से व्यक्ति अपनी आसुरी एवं नकारात्मक वृत्तियों तथा संस्कारों को निकाल कर श्रेष्ठ गुणों का अपने अन्दर विकास कर सकता है। अतः मनुष्य को घर या समाज का सन्यास नहीं करना चाहिये बल्कि उसे समाज के लिये श्रेष्ठ एवं रचनात्मक भूमिका अदा करनी चाहिये।

सतयुग की स्थापना

उपरोक्त चार प्रकार के पुरुषार्थ द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सतयुग के पुनर्निमाण के कार्य में सेवारत है जहाँ सम्पूर्ण सुख, शान्ति, पवित्रता तथा समृद्धि होगी। यह एक ऐसा विश्व विद्यालय है जहां इन चार विषयों की प्रारम्भिक एवं गुह्य शिक्षा दी जाती है तथा अभ्यास कराया जाता है। इस संस्था को पूर्ण विश्वास है कि यह अपने इस महान कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करेगा। प्रश्न है कि संस्था को ऐसा विश्वास क्यूं है कि वह इस कार्य में सफलता प्राप्त करेगी जबकि अन्य लोग इसमें सफलता प्राप्त नहीं कर सके हैं? इसका उत्तर मनुष्य स्वयं इन चार विषयों को पूर्ण अध्ययन करने से प्राप्त कर सकता है। वरना ऐसा प्रतीत होगा कि संस्था एक बहुत बड़ा दावा कर रही है। यदि संस्था का मुख्य प्रतिनिधि यह कहता है कि इस आध्यात्मिक ज्ञान में पवित्रता तथा आन्तरिक दृढ़ता है, इससे समस्याओं का समाधान ठीक रूप से होता है, अभ्यास करने में सहज है, और इतना ही नहीं, यह ज्ञान स्वयं परमात्मा द्वारा दिया जा रहा है, तो उसे अहंकारी मनुष्य के रूप में दोषी ठहराया जा सकता है। और यदि वह यह नहीं बताता कि इस ज्ञान में ये सब गुण हैं तो उसे यह कहकर दोषी ठहराया जा सकता है कि उसने सत्य को दबाया या उसने दूसरों को इस बहुमूल्य खज़ाने से वंचित रखकर उसे स्वयं तक सीमित रखा या उसके बारे में यह भी कहा जा सकता है

(शेष पृष्ठ १३ पर)

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

कलकत्ता—समाचार मिला है कि कलकत्ता बाबा की गद्दी पर प्यारे बाबा का १७ वां अव्यक्त दिवस हर वर्ष की भाँति बड़ी ही विधि पूर्वक मनाया गया। दिन भर योगाभ्यास व शान्ति की किरणें बिखेरने के पश्चात् सायं को पब्लिक फंकशन रखा गया। कलकत्ता के बिशप भ्राता डी० सी० गोराई को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। आप ने अपने भाषण में बाईबिल की कुछ बातें बतलाईं। 'एक पिता के हम सभी बच्चे हैं एक होकर रहे' आप बहनों के इन विचारों से काफी प्रभावित हुए।

बम्बई (गामदेवी)—समाचार मिला है कि प्यारे बाबा का स्मृति दिवस १८ जनवरी शान्ति और शक्ति की प्रेरणा देने वाला रहा। दोपहर को ब्रह्मा भोजन का आयोजन किया गया जिसमें कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति जिनमें म्यूजिक डायरेक्टर, न्यूज एडिटर, लेखक इत्यादि भी शामिल हुए। इसके अलावा सिन्धी भाई-बहनों ने भाग लिया। कई अखबारों में भी समाचार छपा। इस तरह बाबा का सन्देश अनेक आत्माओं तक पहुंचा।

बम्बई (मुलुंद)—ईस्ट में विश्व हिन्दू परिषद की ओर से एक दिन के लिए हिन्दू धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। ३० के करीब विभिन्न धर्म की संस्थायें इसमें सम्मिलित थीं। इस सम्मेलन में अपनी संस्था को भी निमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष भ्राता डॉ० रेगे ने संस्था की सराहना करते हुए कहा कि ब्र० कु० बहनें विश्व कल्याण का जो कार्य कर रही हैं वह बहुत ही महान कार्य है।

भुवनेश्वर—राज्य सरकार द्वारा आयोजित 'उड़ीसा ८५' उद्योग मेले में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गयी। इस मेले में करीब 3 लाख आत्माओं ने परमात्मा का सन्देश प्राप्त किया। इसके अलावा वाणी बिहार के अन्तर्गत १४ से १६ जनवरी तक एक विश्व शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

जयपुर (राजा पार्क)—समाचार मिला है कि आदर्श विद्या मन्दिर शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय द्वारा जयपुर राजा पार्क सेवाकेन्द्र पर पूनम बहन को गीता जयन्ती समारोह के समापन समारोह में अध्यक्षता हेतु निमंत्रण मिला। विद्यार्थी एवं स्टाफ के समक्ष पूनम बहिन ने गीता द्वारा चरित्र उत्थान एवं गीता ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। राजस्थान पत्रिका, दैनिक नव ज्योति, राष्ट्रहित में फोटो सहित समाचार प्रकाशित हुआ।

भरतपुर—समाचार मिला है कि केन्द्रीय जल भूतल परिवहन राज्यमंत्री, भ्राता कुंवर नटवर सिंह केन्द्रीय उर्वरक राज्य मंत्री तथा भ्राता हरिदेव जोशी मुख्य मंत्री राजस्थान सरकार का भरतपुर में नागरिक अभिनन्दन हुआ जिसका निमन्त्रण ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को भी प्राप्त हुआ। अतः इस अवसर पर इन सभी का भरतपुर सेवाकेन्द्र के सामने जलूस में गुजरते समय सेवाकेन्द्र के भाइयों बहनों द्वारा स्वगात किया गया। ब्र० कु० कविता बहन द्वारा स्वागत भवन पर जाकर इन सभी महानुभाओं को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराया गया तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सम्मेलन एवं स्वर्ण जयन्ती समारोह का निमन्त्रण दिया गया।

पुरी—१७वें अव्यक्त स्मृति दिवस के अवसर पर जन-जन को प्यारे बाबा की आदर्श भरी शिक्षाओं को प्रत्यक्ष करने हेतु ईश्वरीय निमंत्रण दिया गया। सभा में पुरी के जिलापाल तथा मजिस्ट्रेट भ्राता श्री युक्त महेश प्रसाद पुरोहित मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। पिता श्री प्रजापिता ब्रह्मा के त्याग युक्त जीवन चरित्र की वी० डी० ओ० फिल्में भी दिखाई गयी।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd No 10563/65-D, (E)—70